केवल मेडीकल व्यवसायियों के लिए

PHARMA दर्पण

Editor- Brijesh Garg   www.medicaldarpan.com   Monthly News Paper

B.N. Medical Complex, Bulandshahr (U.P.) Postal Reg. No.- BSR 52/2020-2022 RNI UPBIL/2011/50248

Year 11 | Issue 01 | D.O.P. 20 November 2021 | Pages 08 | ₹ 10/- Copy | ✆ 09045029158, medicaldarpan.ctp@gmail.com

किसी भी मूल्य पर उपलब्ध नहीं कच्चा माल

जानकारी मिली है कि कच्चे माल की किल्लत के चलते दवा निर्माण व्यापार संकट में है. हिमाचल प्रदेश की लगभग सभी कम्पनियाँ इससे प्रभावित हैं. हिमाचल प्रदेश दवा उत्पादक संघ के अध्यक्ष डॉ॰ राजेश गुप्ता के अनुसार API महँगा होने और आपूर्ति नहीं होने से उत्पादन में कठनाई आ रही है और महँगे दामों पर भी कच्चा माल उपलब्ध नहीं है. फार्मा सेक्टर में दवाओं का उत्पादन करने के लिए करीब 200 किस्म के एपीआई का इस्तेमाल किया जाता है. प्रदेश में 600 फार्मा उद्योग है, इनमें 550 लघु उद्योग हैं. एपीआई का दाम बढ़ने का सबसे अधिक असर इन्हीं उद्योगों पर हो रहा है. भारत में 90 फीसद एपीआई की आपूर्ति चीन से ही होती है. ये भी जानकारी मिली है कि पिछले 3 हफ्ते में कच्चे माल की कीमत ऊचाईयाँ छू रही हैं.

पैरासिटामोल	950 से	1000 तक
सेफेक्सीमाइन	9000 से	12000 तक
सेफपोडोक्साइम	9000 से	16000 तक
टरबुटालीन	12500 से	17500 तक
एमोक्सिसिलिन	1600 से	3000 तक
एसिक्लोफेनाक	800 से	1300 तक
मेटफार्मिन	190 से	550 तक
सिमेथिकोन	75 से	220 तक बढ़ी है.

कोविन कैप्सूल की मंजूरी की तैयारी

विनीत कुमार अग्रवाल

मथुरा से श्री विनीत कुमार अग्रवाल, मो॰ 8077826350 जी ने जानकारी दी है कि स्वदेशी कोविड टीकों में जल्द ही एक और स्वदेशी मेड इन इंडिया कोविन कैप्सूल को आपात इस्तेमाल के लिए मंजूरी देने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने तैयारी की है. केन्द्र सरकार के उपक्रम सीएसआईआर एवं कोविड स्ट्रैटजी समूह के अध्यक्ष डॉ॰ राम विश्वकर्मा ने कहा कि शुरू आत में इसकी कीमत 2 हजार रूपये से 4 हजार रूपये के बीच हो सकती है. और बाद में कीमत 500 रूपये से एक हजार रूपये तक कम हो सकती है.

एक देश, एक कानून सभी को पालन करना आवश्यक

रोज जात-पात कांग्रेस की इतिहास की बातों में न उलझ भ्रष्टाचार से बाहर आने के प्रयास में सक्रिय होना चाहिए. दवा व्यवसासियों व जन-जन की समस्याओं को दूर करने में शासन को सक्रिय होना चाहिए. वर्तमान की समस्याओं को चलते हिन्दू बचेगा तो हिन्दू राष्ट्र व हिन्दुत्व स्वतः स्थापित हो जायेगा.

– नरेंद्र गुप्ता, पूर्व सचिव दवा संगठन, मो. 7747990810.

ऑनलाइन व्यापार का भारी विरोध करना है

ऑनलाइन दवाइयों की बिक्री के बढ़ते प्रभाव के विरोध के लिए एक मीटिंग होलसेल एंड रिटेल कैमिस्ट एसोसिएशन मेरठ के संयोजन में चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज में बुलाई गई. जिसमें एक साथ बहुत से कैमिस्ट ने भाग लिया व आगे की रणनीति बनाई गई कि किस प्रकार इस भयावह स्थिति से निपटना है. मीटिंग में **मुख्य संरक्षक** गोपाल अग्रवाल, मो. 9837087693, **अध्यक्ष** इन्द्रपाल सिंह, मो. 9358436199, **कोषाध्यक्ष** राजेश अग्रवाल, मो. 9457818550, **महामंत्री** घनश्याम मित्तल, मो. 7520390089, **वरिष्ठ उपाध्यक्ष** दिनेश गोयल, देवेन्द्र भसीन, रविन्द्र दुग्गल, मोईउद्दीन गुड्डू, राजेश कुमार, कविराज मलिक, **उपाध्यक्ष** संजय कुमार, प्रवीण कुमार दुआ, अतुल मोहन शर्मा, यशवीर सिंह तोमर, विवेक सिंघल, निशान्त रमन, नीरज तोमर, **संगठन प्रभारी** अरूण शर्मा व **मंत्री** राजेश कुमार जैन, कुंवर पाल सिंह, मोतीराम जैन, रमेश गर्ग, सुकेश शर्मा, विकास मित्तल, नितिन गुप्ता, संजीव रस्तोगी, अरूण त्यागी, अनुज गर्ग, अमित मित्तल, विपिन राणा, नवीन गुप्ता, अमित शर्मा, विकास गर्ग, शरफुद्दीन, क्षितिज गुप्ता, चन्दर चावला, संजय अग्रवाल, सतीश कुमार, राम अवतार तोमर, अमित कुमार, अनिल कुमार मलिक और वरूण अग्रवाल उपस्थित रहे. – विनीत अग्रवाल, मो. 8077826350, मथुरा.

सरकार ने सीरम इंस्टीट्यूट को चार देशों को COVAX के तहत 50 लाख कोविशील्ड खुराक निर्यात करने की अनुमति दी

प्राप्त जानकारी के अनुसार केंद्र सरकार ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया को संयुक्त राष्ट्र समर्थित COVAX वैश्विक वैक्सीन कार्यक्रम के तहत COVID-19 वैक्सीन कोविशील्ड की 50 लाख खुराक नेपाल, ताजिकिस्तान और मोजाम्बिक को निर्यात करने की अनुमति दी है। उन्होंने कहा कि इन तीन देशों के अलावा, SII COVAX के तहत बांग्लादेश को कोविशिल्ड का निर्यात भी करेगा। SII 23 नवंबर से COVAX कार्यक्रम के तहत कोविड वैक्सीन निर्यात शुरू करेगा और नेपाल को 24 नवंबर को कोविशील्ड की पहली खेप प्राप्त होगी । सरकार ने इससे पहले अक्टूबर में, SII को नेपाल, म्यांमार और प्रत्येक को 10 लाख कोविशील्ड खुराक निर्यात करने की अनुमति दी थी। 'वैक्सीन मैत्री' कार्यक्रम के तहत बांग्लादेश।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय को हाल ही में एक संचार में, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) में सरकार और नियामक मामलों के निदेशक प्रकाश कुमार सिंह ने सूचित किया है कि पुणे स्थित फर्म ने 24,89,15,000 खुराक के स्टॉक का निर्माण किया है। कोविशिल्ड और यह कि स्टॉक दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

सन्त चुप रहते हैं,
बुद्धिमान बोलते हैं, मूर्ख बहस करते हैं.

With Best Compliments From Xenon Pharma Pvt. Ltd.
XENON The Innovative People
XENON Pharma Pvt. Ltd.
(A WHO-GMP Certified Company)
For PCD Franchise & Distribution Marketing
• Leader in Covid Range FERAVIR, VORICONAZOLE, POSACONAZOLE, IVERMECTIN & Many more..
• Achieving Customer Satisfaction is Fundamental to our Business, As we provide latest molecules with highest quality standards.
• We also Provide Scientific Data, Promotional Inputs & Gift Articles For Ethical Working and Better Promotion.
• Our most of the Brands are with Registered Trademark & many molecules are first time in India.
• Assurance of Timely Delivery, High Quality & Cost Effective Product Range.
• Competitive Rates and MRPs as per DCGI Norms.
• Timely Delivery & 100% availability of products.
XENON Pharma Pvt. Ltd.
Plot No. 79-80, Sec-6A, IIE, Sidcul, Haridwar-249403
Contact : +91 9811249056, 9971370555
xenonpharmapvtltd.in
Third Party Manufacturing Proposals are also invited

ARE YOU LOOKING FOR ASTHMA RANGE OF PRODUCTS?
Inspicare
Redivent-Duo, Redivent, BudeBest, BudeBest-Duo, Forahale 0.5, BBVENT, Mist-M, Mist-F, Mist-AZ, Forahale-400, Forahale-200, TIOLABA, Redivent-Duo, Flutinorm-S 250, Inspihaler, Forahale-200, Forahale-400, Flutinorm-S-250
For trade enquiries please contact
Best Biotech
76-13-186/6A & B, Beside Lane of Samskruti Function Hall Urmilla Nagar, Road, Bhavanipuram, Opp. AVSR Sky Court, Vijayawada-520012 Andhra Pradesh
Ph: +91 866 2972086, +91 9866908086
+91 9491889086 +91 9441831448
+91 7075558086 +91 9959018086

INTRA LIFE NEXT GENERATION PCD PHARMA COMPANY IN INDIA
All Under One Roof
THE TOTAL END TO END SOLUTIONS
INTRA LIFE THE LARGEST MEDICINE HUB IN INDIA 1700+ PRODUCTS
Call @ 9831149528 | 9353077060
Just SMS or Watsapp (Your Name & Address to 9353077060)
Email: info@intralifeindia.com | www.intralifeindia.com
Corporate House : #61/C, 6th Main Road, 4th Phase, 7th Block, B.S.K. 3rd Stage, Bangalore - 560 085.

BN Pharmaceuticals
अंग्रेजी व आयुर्वेदिक
दवाइयों के विक्रेता
DRUGS LICENCES No.
20B:- UP1320B000242
21B:- UP1321B000242
GSTIN: 09ADFPG4339J2ZE
25/14, Kothiyat, Bulandshahr 203001 (UP)
Ph.: +91 7037629158, 9045029158

Forgo Pharmaceuticals (P) Ltd. (An ISO 9001:2015 Certified Company)
• Knee & Ankle Support
• Body Belts & Braces
• Fracture Aids
• Cervical Aids
• Fingers, Wrist & Arm Supports
A wide range of products available for Third Party & PCD marketing
Tablets & Capsules | Neutraceuticals & Protein Powders | Oral Liquids & Dry Syrup | Dietary Supplements | Injectables | Herbal Preparations | Eye Drops, Ear Drops & Nasal Drops | Wide range of Skin Care Cosmetics | Creams, Lotions, Gels & Ointments | Veterinary Drugs | Shampoo & Soaps | Vaccines & Pre Filled Syringes | Aerosols & Form Fill Seal (FFS)
Our Speciality Divisions
More then 1000 products
All new molecules available
Third party manufacturing also done
Corporate Office: Plot No. 92, Ind. Area Phase-I, Panchkula Haryana 134113
Mfg. Unit Forgo Pharmaceuticals (GMP/GLP/WHO Certified Unit) (AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)
27, DIC IND AREA, Barotiwala, Teh: Baddi, Distt. Solan (HP)
Email : helpdeskforgo@yahoo.com / forgopharmaceutical@yahoo.co.in
Contact Detail : 0172-2569292 / 2568292 / 9814924737 / 7696099905 / 9877640753 / 9569569292

Third Party Manufacturing
PCD/Franchisee for unrepresented Areas
INJECTABLE | TABLETS | CAPSULES | DRY SYRUP | ORAL LIQUID | OINTMENT | POWDER
Goods Dispatch Only 20-30 Days For Third Party
Contact for : Third Party Manufacturing
Conatct +91-7895988890
* Timely Delivery of Goods
* Uninterrupted Service
* Attractive Packing
* Wide range of new Molecules
* Competitive Prices
* Small Batch also Avaliable
* Visual Aid, Literature, MR Bag Gift item, DR. Pad also provide by us.
Quality Products at Affordable Price
WHO-GMP CERTIFIED PRODUCTS   ISO CERTIFIED COMPANY
NASA PHARMACEUTICAL PVT. LTD.
REG. OFFICE : 5/2 Rohini Enclav, Near Bansal Home, Dehradun-248001 (UK). INDIA
MOB: +91-7895988890 E-MAIL: info@nasapharmaceutical.in WEB: www.nasapharmaceutical.in

INVITES
FRANCHISEE, PCD
3rd Party Manufacturing
with new Combinations
IN ALL OVER INDIA
ACLOPIC-TH TABLETS | GPDEC-M1 TABLETS | RUTIDE TABLETS | REOXIM-250 TABLETS
HIMONT AL TABLETS | GPDEC-M2 TABLETS | RUTIDE-PLUS TABLETS | REOXIM-500 TABLETS
HIMONT FX TABLETS | TELMIPIC-AM TABLETS
for any queries contact us
Astopic Lifesciences
SCF 247, IInd Floor, M, Market,
Manimajra Chandigarh (U.T.)-160101
E-mail:- astopiclifesciences@gmail.com
website : www.astopiclifesciences.com
M: +91 90234-50664, Ph: 0172-4676750
Regional Officer : 120 H/NO. 949, Nagrik Gruh Nirman
Sahakari Sanstha Sonba Nagar(Maharashtra)-440023
Mobile +91-7774007053
Astopic Lifesciences

वायु प्रदूषण एक आपातकालीन चिकित्सा चुनौती के रूप में उभर रहा है

वायु प्रदूषण सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है और एक कठिन समस्या समाज का सामना होना जारी है। हाल ही में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) एनसीआर क्षेत्र में खतरनाक स्तर को पार कर गया है, और सभी के जीवन पर कहर बरपा रहा है। इस तथ्य के बावजूद कि वायु प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभाव लंबे समय से ज्ञात हैं, कम जागरूकता है कि इसके कारण होने वाली अधिकांश रुग्णता और मृत्यु दर हृदय प्रणाली पर प्रभाव के कारण होती है। महामारी विज्ञान के अध्ययन के साक्ष्य ने वायु प्रदूषण और स्ट्रोक सहित हृदय रोगों के बीच एक मजबूत संबंध का प्रदर्शन किया है। विशेष रूप से चिंता की बात यह है कि इस संघ की ताकत निम्न और मध्यम आय वाले देशों में अधिक मजबूत है जहां तेजी से औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण बढ़ने का अनुमान है।

वैश्विक स्ट्रोक बोझ का 90% से अधिक परिवर्तनीय जोखिम कारकों से जुड़ा हुआ है, जिनमें से वायु (परिवेश और घरेलू) प्रदूषण सूची में सबसे ऊपर है। इस प्रकार वायु प्रदूषण के कारण होने वाले स्ट्रोक से हताहतों की संख्या को रोकना महत्वपूर्ण है। स्ट्रोक अटैक होने से पहले पहचाने जाने योग्य लक्षण होंगे जिसे अक्सर मिनी स्ट्रोक के रूप में जाना जाता है। लक्षण केवल एक मिनट के लिए बने रहते हैं लेकिन 2 दिनों के भीतर स्ट्रोक की एक बड़ी शुरुआत का संकेत देते हैं। समय पर हस्तक्षेप प्रति मिनट 2 मिलियन न्यूरॉन्स को संरक्षित करने में मदद कर सकता है क्योंकि पीएम और सीओ जैसे साँस के यौगिक थक्का बनने की ओर ले जाते हैं और मस्तिष्क में रक्त के प्रवाह को अवरुद्ध करते हैं। वायु प्रदूषण भारत और चीन जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मृत्यु दर के लिए शीर्ष पांच जोखिम वाले कारकों में शुमार है। यह अनुमान लगाया गया था कि घरेलू वायु प्रदूषण के कारण होने वाली 99% मौतें और परिवेशी वायु प्रदूषण के कारण 89% मौतें निम्न और मध्यम आय वाले देशों में हुईं। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी का अनुमान है कि 2015 में, वायु प्रदूषण में सभी हृदय संबंधी मौतों का 19%, स्ट्रोक के कारण 21% मौतें और इस्केमिक हृदय रोग के कारण 24% मौतें हुईं। वायु प्रदूषण और एथेरोस्क्लोरोटिक कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों के बीच मजबूत संबंध, जिसमें मायोकार्डियल इंफार्क्शन और स्ट्रोक शामिल हैं, वास्तव में उच्च हैं।

प्रमुख अध्ययनों के विभिन्न विश्लेषणों में यह बताया गया है कि पीएम 2.5 के लिए दीर्घकालिक जोखिम प्रत्येक 10 इकाइयों की वृद्धि के लिए कार्डियोवैस्कुलर मृत्यु दर के मौजूदा जोखिम से 11% अधिक है। दिलचस्प बात यह है कि उन क्षेत्रों में भी बढ़ा हुआ जोखिम देखा गया जहां पीएम 2.5 यूरोपीय संघ के वायु गुणवत्ता मानक 25 माइक्रोग्राम / एम 3 को पूरा करता है, जो कि हमारे देश में सिफारिश से कम है, कैरोटिड धमनी की रुकावट की घटना भी बढ़ रही है, जो मुख्य रक्त वाहिका आपूर्ति करती है। PM2.5 एकाग्रता में वृद्धि के साथ मस्तिष्क। हाल ही में एक व्यवस्थित विश्लेषण में बताया गया है कि पीएम 2.5 जैसे वायु प्रदूषकों के अल्पकालिक जोखिम से भी अस्पताल में भर्ती होने और स्ट्रोक के कारण मृत्यु हो सकती है।

फेफड़ों में प्रवेश करने वाले कणों को मैक्रोफेज नामक कोशिकाओं द्वारा अंतर्ग्रहण किया जाता है, जो फेफड़ों के भीतर स्थानीय भड़काऊ प्रतिक्रिया की ओर जाता है और अंततः शरीर में रक्त वाहिकाओं में फैल जाता है। प्रतिक्रिया से रक्त वाहिका के कामकाज के साथ-साथ परिसंचरण में लिपिड स्तर में परिवर्तन होता है। प्रदूषण कणों के कारण होने वाली सूजन (प्रतिक्रिया) से हृदय गति विनियमन सहित रक्त परिसंचरण में परिवर्तन होता है। PM2.5 के संपर्क में आने के बाद हृदय गति परिवर्तनशीलता (HRV) के विभिन्न मापदंडों में कमी को प्रदर्शित करने वाले व्यापक प्रमाण हैं। कई जानवरों के अध्ययनों से पता चला है कि शहरी पीएम और डीजल निकास कणों के संपर्क में आने से हृदय गति अनियमितता (अतालता) की घटना या संवेदनशीलता बढ़ जाती है, जिससे हृदय में थक्का बन सकता है, जिससे स्ट्रोक की संभावना बढ़ जाती है।

-डॉ. विपुल गुप्ता, निदेशक-न्यूरोइंटरवेंशन, आर्टेमिस-एग्रीम इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंसेज.

Our General Divisions
MERRIL MESTRA STERILE GENETICS
MERRIL Third Party Enquiry Also Welcome
For Mestra App
And many more ...
We have more then 250 products in our successfully running company.
For any query :- 9719839944
New Molecules available
Natural Progesterone 300mg SR Tab
Faropenem-200mg Tab.
Ambroxol+ Levocetrizine+ Montelukast
Trypsin+ Rutoside+ Bromeline+ Diclofenac
Sultamycillin-375mg Tab.
Rifaximin-400mg Tab.
Thiocolchicoside+ Aceclofenac+ Paracetamol
Medoxyprogesterone 10mg
Introduce New Derma Division
Emocare A Neuro-Psychiatrist Divison
NUECAD Cardiac-Diabetic division
Womana Gyne-infertility division
BEAUKIN (A Derma Division of Merril Pharma)
Piraciti-Plus Citicoline 200mg + Piracetam 800mg Tab.
Metolip-ER 25/50 Metoprolol Tartrate 25/50 (ER)
Gensure-Sachet L-Arginine 3gm. + Proanthocyanidin 75 mg.
Antihist-D Desloratadine 10 mg.
Velpy-200/300/500 Sodium Valporate With Valporic Acid
Nuepido-AS Clopidogrel 75 mg +Aspirin 75 mg
Gensure-LC L-Carnitine + Co-Enzyme + Astaxanthin + Piperin + Lycopene+ Zinc Sulphate
Tacroril Tacrolimus Cream 0.03
Emofexine Tab. Desvenlafaxine 50mg ER
Nuepido-Plus Clopidogrel 75 mg +Aspirin 150 mg
NMPC-softgel/SR tab/ Inj. Natural Micronised Progesterone B.P. 100/200/300 mg
Candigel Luliconazole 1.0% w/w
Emofexine Plus -50 Desvenlafaxine 50 mg + Clonazepam 0.5 mg
Tenzex-M Teneligliptin 20mg + Metformin Hydrochloride 500mg
Gensure-F Folic Acid, Inositol, L-Arginine, Selenium Grape Seed Extract, Lycopene, Vitamins & Zinc
Eberil Eberconazole 30 mg
Registered Office :- A-401/402, Empire Business Hub, Science City Road, Ahmedabad-380060 (Gujrat)-India,
Email : order@mestrapharma.com Website : www.mestrapharma.com

भारत को लगभग 6,500 कार्डियक कैथेटर लैब सुविधाओं की आवश्यकता है: डॉ० सीएन मंजूनाथ

श्री जयदेव इंस्टीट्यूट के डीन और निदेशक डॉ सीएन मंजूनाथ जी ने सीवीडी प्रसार, प्रगति और आगे की चुनौतियों के बारे में अधिक जानने के लिए हृदय विज्ञान और अनुसंधान विभाग।

वास्तव में, भारत में 25% मौतें हृदय रोग के कारण होती हैं, और हम सभी जानते हैं कि यह एक जीवन शैली की बीमारी है और सभी जीवन शैली की बीमारियों में नंबर एक हत्यारा है। जीवनशैली से जुड़ी अन्य बीमारियों में उच्च रक्तचाप और मधुमेह शामिल हैं। हमें स्ट्रोक, कैंसर और, जाहिर है, स्क्रीन की लत है।

इसलिए हृदय रोग का प्रचलन बढ़ गया है। पिछले पांच वर्षों में, हृदय रोग के प्रसार में लगभग 20% की वृद्धि हुई है। दिल के दौरे नंबर एक हत्यारे हैं, और दुर्भाग्य से, भारत में, दिल का दौरा पड़ने वालों में से लगभग 30% लोग 40 साल से कम उम्र के हैं, जिसका अर्थ है कि युवा भारतीयों और मध्यम आयु वर्ग के भारतीयों में दिल के दौरे दिल के दौरे की चपेट में आ रहे हैं।

इसलिए भारत में देखभाल मुख्य रूप से तृतीयक देखभाल पर केंद्रित है जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं। यह मुख्य रूप से टीयर ए शहरों में केंद्रित हो रहा है और अब यह टीयर बी शहरों में प्रवेश कर रहा है, इसलिए पूरे देश में हृदय की देखभाल की गुणवत्ता एक समान नहीं है। इसलिए, कर्नाटक में, हमारे पास सरकारी और निजी दोनों तरह के 60 मेडिकल कॉलेज हैं, इसलिए इनमें से अधिकांश अस्पतालों में कार्डियोलॉजी यूनिट के साथ-साथ एक कैथ लैब भी है क्योंकि आज दिल के दौरे का सबसे अच्छा इलाज समय पर किया जाने वाला इलाज है; दिल के दौरे का इलाज शुरू करने में हर तीस मिनट की देरी से मौत का खतरा 7% बढ़ जाता है, इसलिए हमें जो सबसे महत्वपूर्ण चीज प्रदान करनी है, वह है अर्ध-शहरी और ग्रामीण इलाकों में भी, समय पर इलाज।

कर्नाटक में हृदय की देखभाल

तो इस समय, कम से कम कर्नाटक में, क्या हो रहा है कि छोटे अस्पताल शुरू में उनका इलाज थक्का-विघटन चिकित्सा के साथ करते हैं, जिसे थ्रोम्बोलाइटिक थेरेपी कहा जाता है, फिर उन्हें उस स्थान पर स्थानांतरित कर दिया जाता है जहां कैथ लैब की सुविधा उपलब्ध है। यदि कोई विकल्प दिया जाता है, तो दिल के दौरे का सबसे अच्छा इलाज एंजियोप्लास्टी है, और हम इसे "प्राथमिक एंजियोप्लास्टी" कहते हैं। इस कैथ लैब सुविधा के दुर्गम होने के कारण, बहुत से लोगों के पास पहुंच नहीं है, लेकिन फिर भी, यदि कैथ लैब की सुविधा उपलब्ध नहीं है, तो सबसे अच्छी बात यह है कि उन्हें तुरंत थक्का घोलने वाली दवा से इलाज किया जाए, और हमें उस पर काम करना होगा जिसे हब और स्पोक कहा जाता है। आदर्श प्रवक्ता छोटे अस्पताल होंगे। तालुक अस्पताल मुख्य रूप से सेंट्रल हब अस्पताल हैं और वहीं होंगे जहां कैथ लैब की सुविधा होगी। ऐसे में समय पर इलाज कराने वाले मरीजों की संख्या 50 से 60 फीसदी के आसपास ही है। चाहे वह थ्रोम्बोलिसिस हो या पीसीआई हो, फिर भी 30 से 40% रोगियों की अस्पताल में प्रस्तुति में देरी होती है। क्योंकि हार्ट अटैक के मरीज नंबर एक का इलाज करने का उद्देश्य जीवन को बचाना है, इसके बारे में कुछ प्रश्न हैं और उसके हृदय की कार्यप्रणाली को भी संरक्षित करना है, क्योंकि आपको हृदय की अच्छी कार्यप्रणाली के साथ जीवित रहना चाहिए, तो हम जीवन की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं।

तो इस समय कर्नाटक में लगभग 225 कैथ लैब हैं, जो एक अच्छी संख्या है। देश भर में, हमारे पास लगभग 2000 कैथ लैब हैं, इसलिए इस देश में रोग की भयावहता और हृदय रोग के बोझ को देखते हुए, जो 1960 में लगभग 3% था, आज यह लगभग 6 से 8% को छू रहा है। शहरी क्षेत्रों में और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 5%।

प्रारंभ में, सभी ने माना कि दिल का दौरा या हृदय रोग शहरी अभिजात वर्ग की बीमारी थी। नहीं, यह अब गरीबों की बीमारी है, मजदूरों की बीमारी है, और गांवों की बीमारी है। इसलिए, मेरे विचार से, भारत को लगभग 6,500 कार्डिएक कैथेटर लैब सुविधाओं की आवश्यकता है।

जयदेव इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोवास्कुलर साइंसेज

जयदेव इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोवास्कुलर साइंसेज एंड रिसर्च कर्नाटक स्वायत्त संस्थान की सरकार है और कर्नाटक के माननीय मुख्यमंत्री गवर्निंग काउंसिल के अध्यक्ष हैं, जबकि चिकित्सा शिक्षा मंत्री सह-अध्यक्ष और निदेशक हैं, और सदस्य सचिव।

और जयदेव इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियो-वैस्कुलर साइंसेजआज विशेष रूप से हृदय की देखभाल के लिए 650 बिस्तरों वाला हृदय अस्पताल मिल गया है। हमारे पास मैसूर में एक और बड़ी सुविधा है, जो 400 बिस्तरों की है, और तीसरी सुविधा कलबुर्गी में है, जिसमें 350 बिस्तर हैं। इसलिए अगले 3 से 4 सप्ताह के समय में, इंफोसिस फाउंडेशन के सौजन्य से, हम बैंगलोर में मौजूदा जयदेव अस्पताल परिसर में एक और 350-बेड की हृदय सुविधा जोड़ रहे हैं। इसलिए, इन सभी चीजों के साथ, हमारे पास 1800 बिस्तरों वाली कार्डियक सुविधा है, जो इसे भारत के सबसे बड़े हार्ट केयर डेस्टिनेशन में से एक बनाती है।

स्वास्थ्य सेवा में पीपीपी

मुझे लगता है कि पीपीपी मॉडल, मेरी राय में, अच्छी तरह से काम करता है बशर्ते पहला टुकड़ा मजबूत हो, यानी सार्वजनिक-निजी भागीदारी। यदि कोई सार्वजनिक संस्थान बहुत अच्छा कर रहा है, तो क्योंकि उसे कैचमेंट, एक रोगी भार और रोगी इनपुट की आवश्यकता है, पहला पी मजबूत होना चाहिए, तभी पीपीपी मॉडल काम करता है। कैथ लैब की संख्या बहुत कम है। शायद चार या पांच साल पहले, केवल 500 या 600 कार्डिएक कैथ लैब थे, इसलिए पिछले तीन या चार वर्षों में कार्डियक कैथ लैब्स का अचानक उछाल आया है, और कुछ मध्यम आकार के अस्पतालों में क्या हुआ है, क्योंकि पहले यह कैथ लैब अंतरराष्ट्रीय मिश्रण, जर्मनी से, हॉलैंड से, या अमेरिका से, यह बहुत महंगा है, 3 से 4 करोड़ की सीमा में, और सभी अस्पताल इसे वहन नहीं कर सकते।

इस किफायती कैथ लैब की बहुत जरूरत थी। इस कार्डियक केयर को अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों या छोटे मध्यम आकार के अस्पतालों में ले जाना समय की मांग थी।

कैथ लैब में प्रगति

साथ ही, हमें एक उच्च गुणवत्ता वाले कैथ लैब स्विचर की आवश्यकता है जो कि सस्ती और लागत प्रभावी भी हो। तो उस अर्थ में, मेरा मानना है कि यह हमारा एक लंबे समय से सपना था कि भारत इस तरह से अपनी खुद की कैथ लैब का निर्माण करे, क्योंकि इनवॉल्यूशन इमेजिंग टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड एक महान सुविधा के साथ आया था और उनके पास 200 से अधिक इंस्टॉलेशन हैं, और हाँ, निश्चित रूप से पहले, हुआ भी वही।

उस समय, लगभग 1.5 करोड़ में CT स्कैन किया जाता था, और केवल बड़े, बड़े अस्पताल संस्थानों में CT स्कैन होता था। अब हम किसी भी कोने में जाते हैं, यहां तक कि एक छोटे से शहर में, और मुझे लगता है कि अगले कुछ वर्षों में हमारे पास अधिक से अधिक कैथ लैब होने जा रहे हैं, विशेष रूप से जहां केसलोएड कम है, जहां रोगियों की संख्या कम है, फिर भी वे चाहते हैं। एक कैथ लैब है, वे हमेशा एक बजट प्रकार की कैथ लैब के लिए जाना चाहते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि यह वह जगह है जहां भारत शायद कुछ प्रगति कर सकता है।

युवा हृदय रोग विशेषज्ञों के लिए संदेश

नवोदित हृदय रोग विशेषज्ञ के लिए संदेश है, "हां, निर्णय लेना बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए यही कारण है कि निर्णय लेना हस्तक्षेप से अधिक महत्वपूर्ण है।" निर्णय लेना चीरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। दरअसल, इलाज बीमारी से ज्यादा हानिकारक नहीं होना चाहिए, और साथ ही हमें यह भी पता होना चाहिए, बेशक, अब एक तकनीकी विस्फोट हो रहा है, इसलिए युवा हृदय रोग विशेषज्ञ ऊर्जावान हैं और इन सभी के लिए बहुत अधिक जोखिम होना चाहिए। प्रक्रियाएं। उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि किसी प्रक्रिया को कब नहीं करना है। साथ ही, हमें रोगी की वित्तीय पृष्ठभूमि और उस वित्तीय पृष्ठभूमि के भीतर यह भी समझना चाहिए कि हम गुणवत्तापूर्ण देखभाल कैसे प्रदान कर सकते हैं। इसलिए कीमतों में लचीलापन होना चाहिए क्योंकि कुछ लोग अमीर हैं, कुछ लोग मध्यम वर्ग के हैं, और कुछ लोगों के पास मूल्य लचीलेपन तक पहुंच नहीं है, इसलिए हमें समाज के सभी वर्गों को संबोधित करना चाहिए।

और साथ ही, उन्हें हमेशा चर्चा के लिए खुला रहना चाहिए, उन्हें दूसरी राय के लिए खुला होना चाहिए, जिससे जनता और रोगियों का विश्वास बढ़े, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। और दूसरों से सीखने में संकोच नहीं करना चाहिए, इसलिए कैथलैब में प्रवेश करते समय अहंकार और अहंकार नहीं होना चाहिए। वास्तव में, हमारी संस्था में, मैंने कार्डिएक कैथ लैब के प्रवेश द्वार पर "कृपया बिना अहंकार और अहंकार के कार्डियक कैथ लैब में प्रवेश करें" प्रदर्शित किया है, क्योंकि, अंततः, रोगी की सुरक्षा महत्वपूर्ण है।

PRIDE PHARMA
(AN ISO 9001:2015 MSME Certified Co.)
Landline: 0135-2974927
Website: www.pridepharma.in
www.pridepharma.info
Email: pridepharma@hotmail.com
Mob: 9412052416, 7060152416, 8006852416, 8006254647
FOR THIRD PARTY MANUFACTURING
(SMALL BATCHES ALSO AVAILABLE)
CONTACT ON 7830052416
PRIDE PHARMA
Invites
Parties, ASM's, and Medical Representatives for the Franchise in the unrepresented areas
PRIDE PHARMA HAS WIDE RANGE OF
Tablets | Capsules | Injections | Herbal Products | Protein Powder | Dry Syrups | Syrup | Ointments
PAN INDIA PRESENCE
WE OFFER
• Attractive Packaging
• Latest Molecules
• All Promotional Inputs
• Monopoly Rights
• Highest Quality Standards
• Gift Articles
GMP Certified Manufacturing WHO
24 SHRIRAM COMPLEX,94/1 SHRIRAM PURAM COLONY LANE NO.1,KANWALI ROAD, DEHRADUN (U.K)

SKIN CARE
e-derma
A fastest growing Pharma Company with a wide range of products..
▸Latest Attractive Packing
▸With All Promotional
▸Inputs
Finest Quality
More Than 190 Products
Franchisee For
SKIN SPECIALIST
Products
e-derma
PHARMA INDIA PVT. LTD.
An ISO 9001:2015 Certified Company
9034435000, 9034635000
edermapharma@hotmail.com
www.edermapharma.com

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र

डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में व्यक्ति को सुखद तथा शुभ स्वप्न दिखाई देते हैं. इस नक्षत्र में व्यक्ति मांस का क्रय-विक्रय करता है तथा नये घर में प्रवेश करता है. स्वप्न में व्यक्ति नये-नये कार्य आरम्भ करता है. व्यक्ति स्वप्न में भूमि तथा भवन इत्यादि खरीदता है तथा नए भवन का निर्माण करता है. व्यक्ति जहाज में बैठकर दूर-दूर स्थानों की यात्रा करता है तथा इच्छित वस्तु की प्राप्ति करता है. स्त्रियां अपने किसी संबंधी की मृत्यु देखती हैं तथा उसकी मृत्यु पर विलाप करती हैं. स्त्रियां स्वयं को नाव में सवार होकर नदी, तालाब इत्यादि में सैर करते हुए देखती हैं. व्यक्ति स्वप्न में कुत्ते, सांड, घोड़े इत्यादि की सवारी करता है तथा उनका क्रय-विक्रय करता है, इसके अतिरिक्त व्यक्ति हरे-भरे वृक्षों से फल तोड़ते हुए भी स्वयं को देखता है. इस प्रकार के स्वप्न शुभ फलदायी होते हैं. ऐसे स्वप्न यदि संध्याकाल में दिखाई दें तो इनका अर्थ है कि व्यक्ति को कहीं दूर स्थान से बुलावा आएगा. तथा उसे वहाँ धन का लाभ होता है. व्यक्ति को नये-नये स्थानों पर भ्रमण करने का अवसर प्राप्त होता है. व्यक्ति पुराने भवन को छोड़कर नये भवन में प्रवेश करता है तथा नौकरी में उन्नति प्राप्त करता है. इस प्रकार के स्वप्न दिवाकाल में दिखाई दें तो उनका फल संध्याकाल में देखे गये स्वप्नों से कुछ भिन्न होता है. इसके अनुसार व्यक्ति को कहीं से सुखद समाचार की प्राप्ति होती है तथा आय में वृद्धि होती है. सुहागिन स्त्रियां यदि ऐसे स्वप्न देखती हैं तो उनके पति की आयु में वृद्धि होती है तथा समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है. विधवा स्त्रियां यदि ऐसे स्वप्न देखें तो उनका पुनः विवाह हो जाता है. ऐसे स्वप्न दिवाकाल में दिखाई दें तो उनका फल संध्याकाल से भिन्न तथा कम लाभ देने वाला होता है. इसके विपरीत इस प्रकार के स्वप्न रात्रि में दिखाई दें तो इनका प्रभाव अत्युत्तम होता है. रात्रिकाल में दिखने वाले ऐसे स्वप्नों के फलस्वरूप व्यक्ति की आय में बढ़ोत्तरी होती है तथा घर एवं मित्र समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है. व्यक्ति को इच्छित वस्तु की प्राप्ति होती है तथा विदेश यात्रा का योग बनता है. व्यक्ति को अपनी स्त्री के द्वारा यश व धन की प्राप्ति होती है तथा विदेश गमन का अवसर प्राप्त होता है. इस प्रकार के स्वप्न यदि प्रभातकाल में दिखाई दें तो इनका फल भी रात्रिकाल के फल के समान ही होता है. इसके फलस्वरूप भी व्यक्ति को अर्थ प्राप्ति तथा विदेश भ्रमण का अवसर प्राप्त होता है.

– डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मो॰ 9711034710, 7599096331.

Is Cold Water Good for Health? Find it Out Here!

Can you improve your health by drinking a few glasses of cold water daily? Many people try to control their temptation for chilled water as they are under the impression that it might prove harmful. Water is an essential source that comes with a large number of health advantages. What's better than quenching your thirst with a glass full of ice-cool water? Everyone is aware that the human body needs eight glasses of water per day to retain a healthy system. It is directly equivalent to 2 liters or half a gallon of water every day. But many people also misunderstand it for warm water only. There is no debate at all on the efficacy of warm water for the overall well-being, but there is a multitude of cold water positives as well. By sneaking out below, you can come to know about the benefits and effects of drinking cold water. Also, read our blog on whether coconut water is good for diabetics or not in detail here!

What Are the Top Benefits of Drinking Cold Water?

Here are the surprising effects of satiating your thirst with a few glasses of cold water. Check them out below:

Increased metabolism and weight loss

The body metabolism rate of the body indicates whether you have good health or not. Many people believe that cold water is only relevant to weight gain, but this is not true. Taking slow sips of cold water can also boost up your metabolism rate. The recent research from the German experts makes it evident that consuming 6 cups of chilled water daily can surge up the metabolism count by almost 50 calories every day. It is equivalent to going for a walk of 15 minutes every day. Thus, it is pretty evident that you can also cut down on calories by intake of cold water. It is possible to maintain the internal temperature with ice water and burn excess fats and sugars that cause loss of weight.

Your perfect workout partner

A Coldwater bottle can accompany you for the workout as well. A review suggests that people who drink cool water at the time of exercising are less prone to dehydration than those who drink warm water. Most athletes and runners often take a slow sip of cold water rather than warm ones to maintain humidity in the body. People on an exercise regime gradually face a rise in their actual body temperature if they stick to drinking hot water. While they are cycling, running, or lifting weights, cold water is a better option to keep you hydrated all the time. Hence, if you are hitting a gym, pack a bottle of H2O for yourself along with some ice cubes to enjoy a soothing session. It can also prevent any type of soreness or inflammation before or after the workouts as well. Those facing constant headaches can also keep some ice cubes with themselves as it numbs down the pain.

Helps in soothing pain

When you drink cold water, it activates the skin sensors that level up the heart rate and give you an adrenaline rush. This generates a bit of a skittish feeling that appears incredible. As adrenaline triggers, you tend to stay more alert and mentally active. Research ascertains that apart from caffeine, even the ice-cool water helps keep you more focused and attentive. The alert mind accelerates better decision-making and uplifts your mood as well. It is a common reason why people offer a cold glass of water to those suffering accidental injuries as it keeps the mind alert. Hence, you face lesser pain despite the trauma you are undergoing in this scenario. You can also read our blog on similar topics of raisin water benefits for the skin.

Rehydrates you

Do you feel like burning out quickly? Well, then switch to ice-cold water in place of the lukewarm or room temperature water. Researchers from Columbia University mentioned a study that says the human body absorbs cold water more quickly as compared to the one at room temperature. This, in a way, helps in repelling all the side effects of dehydration.

Detoxification

The benefits of drinking cold water are, it flushes the toxic substances out of your body. It means by drinking cold water; you can prevent its creation and the adverse effects on your immunity system. Do you like to sip on plain water? If yes, it would be indeed more fun to hydrate yourself with chilling cold water. Infusing some ice into the plain water can make it a power drink as there are numerous antioxidants, minerals, and vitamins inside it. Isn't it a great idea to detox naturally with some cold water without compromising on your taste? There are many other detoxifying drinks that you can mix into cold water and rejuvenate your taste-buds. You can add some lime, orange, and lemon that could boost up the Vitamin C levels in your digestive system. This can relieve bloating and enhance your digestion as well. For adding sharper flavors, adding mint can also stimulate the digestive enzymes and soothe you from within. Cucumbers are also rich in Vitamin A, C, and B that could transfer essential electrolytes to your body.

Wrapping Up

The positive effects of drinking cold water are countless! Drinking this type of water can hydrate you and also assist in weight loss. Also, learn about the side effects of jeera water if drank without proper guidance. All these factors are in a way relevant to the enhanced performance and benefits of drinking cold water. Even while performing exercises, grab your bottle of ice-cold water and make it your habit henceforth. No more worrying about the adverse effects of cold water as there's enough evidence of its advantages on your physical and mental health. Your ultimate goal must be to keep yourself hydrated and avoid entering the debate of hot water or cold water. Anything in excess is harmful, and drinking cold water is advisable only if your body permits for the same.

विटामिन डी की कमी से बच्चों में आता है गुस्सा और चिड़चिड़ापन खिलाएं ये 7 फूड्स

क्या आपको हैरानी नहीं होती जब छोटे बच्चों को गुस्सा आता है या वे जिद करते हैं? बच्चों में चिड़चिड़ेपन को अक्सर लोग परिवार के किसी सदस्य का अनुवांशिक असर मानकर नजरअंदाज कर देते हैं. मगर बच्चों के चिड़चिड़े स्वभाव का कारण उनमें विटामिन डी की कमी भी हो सकती है. जी हाँ, हाल में हुई एक रिसर्च में इस बात का खुलासा किया गया है कि विटामिन डी की कमी से छोटे बच्चों में चिड़चिड़ेपन की समस्या हो सकती है. ये रिसर्च 'जर्नल ऑफ न्यूट्रीशन' नाम के जर्नल में छापी गई है. इस रिसर्च में पता चलने वाली मुख्य बातें और विटामिन डी वाले आहार, जिन्हें बच्चों को खिलाने से चिड़चिड़ापन दूर होगा.

क्या कहती है रिसर्च?:- Journal of Nutrition में छपे एक नए रिसर्च के अनुसार विटामिन डी की कमी से स्कूल जाने वाले (5 साल से बड़े) बच्चों में एक तरह का चिड़चिड़ापन आ जाता है और उनका व्यवहार आक्रामक हो जाता है. इसके अलावा ऐसे बच्चे अपने आप में खोए हुए, चिंतित और अवसादग्रस्त हो जाते हैं. इन बच्चों में जल्दी-जल्दी मूड बदलने (मूड स्विंग्स) की समस्या देखी जाती है. ये रिसर्च मिशिगन यूनिवर्सिटी द्वारा की गई है. हमारे शरीर के स्वास्थ्य के साथ-साथ विटामिन्स और पोषक तत्व हमारे मूड को भी प्रभावित करते हैं. आपको शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए सभी तरह के पोषक तत्वों की जरूरत होती है. इस रिसर्च के लिए प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले 5 साल से 12 साल की उम्र के 3202 बच्चों पर अध्ययन किया गया. इन बच्चों की रोजाना की आदतें, माँ-बाप का शैक्षिक बैकग्राउंड, वजन, लंबाई और उनके खानपान आदि को ध्यान में रखकर शोधकर्ताओं ने आँकड़े जुटाए और फिर ब्लड टेस्ट किया. इसके बाद उन्होंने निष्कर्ष दिया कि छोटे बच्चों में विटामिन डी की कमी से व्यवहार परिवर्तन की समस्या बढ़ गई है.

बच्चों में विटामिन डी की कमी:- मुख्य शोधकर्ता प्रोफेसर Eduardo Villamor बताते हैं कि जिन बच्चों में स्कूली शिक्षा के दौरान विटामिन डी की कमी होती है, उनमें बिहैवियर प्रॉब्लम और चिड़चिड़ेपन की समस्या ज्यादा देखी गई है. आपको बता दें कि बच्चों के स्वभाव में चिड़चिड़ेपन की समस्या पिछले कुछ समय में काफी बढ़ गई है. छोटी उम्र में ही बच्चों को छोटी-छोटी बातों पर इतना गुस्सा आता है कि वे गुस्से के कारण चीजों को तोड़ने-फोड़ने और खुद को नुकसान पहुँचाने में भी नहीं सोचते हैं.

क्यों हो रही है बच्चों में विटामिन डी की कमी?:- गाँवों की अपेक्षा शहरों के बच्चों में विटामिन डी की कमी ज्यादा तेजी से बढ़ी है. विटामिन डी का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत सूरज की किरणें हैं. आजकल शहरों में बच्चे बाहर पार्क में खेलने के बजाय घर के अंदर रहना ज्यादा पसंद करते हैं. इसके अलावा आजकल स्कूलों में बच्चों को इतना काम दे दिया जाता है, जिससे उनके पास खेलने-कूदने का टाइम नहीं मिलता है. ये बच्चों में विटामिन डी की कमी के बड़े कारण हैं. इसके अलावा बच्चों में जंक फूड्स, रेडी टू ईट फूड्स, सॉफ्ट ड्रिंक्स आदि की लत के कारण भी विटामिन डी की कमी हो जाती है.

विटामिन डी की कमी पूरी करने वाले आहार:- विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत दूध है, इसलिए बच्चों को रोज रात में एक गिलास दूध जरूर पिलाएं. • योगर्ट भी विटामिन डी का अच्छा स्रोत है. बच्चों के लंच बॉक्स में खाने या सलाद के साथ योगर्ट दे सकते हैं. • मशरूम विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत है इसलिए बच्चों के लंच और डिनर में मशरूम वाली डिशेज बनाकर दें. • चीज खाना बच्चों को पसंद होता है. चीज में भी अच्छी मात्रा में विटामिन डी होता है. • अंडे के पीले हिस्से में विटामिन डी होता है. • संतरे का जूस भी विटामिन डी का अच्छा स्रोत है. • मछलियाँ विटामिन डी का अच्छा स्रोत हैं.

कोलकाता: राज्य में 40 लाख से अधिक के लिए दूसरी जाब अतिदेय

कोलकाता: बंगाल में टीकाकरण अभियान अब सबसे बड़ी चुनौती बन गया है, जिसमें 4.8 लाख लोग और 35.4 लाख लोग क्रमश: अपनी दूसरी कोवैक्सिन और कोविशील्ड खुराक समय पर लेने में विफल रहे हैं।

उनमें से काफी अधिक 2.9 लाख कोवैक्सिन प्राप्तकर्ता हैं जिन्होंने अपनी दूसरी खुराक में लगभग ढाई महीने की देरी की है और 11.6 लाख कोविशील्ड प्राप्तकर्ता हैं जिन्होंने अपनी दूसरी खुराक में 126 दिन या चार महीने से अधिक की देरी की है। कोलकाता में भी स्थिति बेहतर नहीं है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग द्वारा 15 नवंबर को संकलित एक विस्तृत आंकड़ों के अनुसार कोलकाता में अब तक सबसे ज्यादा ऐसे लोग हैं, जिन्होंने समय पर अपनी दूसरी खुराक नहीं ली है। कोलकाता में बंगाल की तरह 35,425 लोगों ने अपनी पहली खुराक के 70 दिन बाद भी अपना कोवैक्सिन नहीं लिया है और 14.1 लाख लोगों ने अपनी पहली खुराक लेने के 126 दिनों के बाद भी अपनी कोविशील्ड खुराक नहीं ली है। टीओआई पहले ही बता चुका है कि बंगाल में लगभग 42.4 लाख लोगों ने समय पर अपनी दूसरी खुराक नहीं ली है। इनमें से 24 लाख लोगों को दूसरी खुराक देनी है और 18 लाख लोगों को दूसरी खुराक देनी है। कोवैक्सिन के लिए दूसरी खुराक की नियत तारीख पहली खुराक के 29 से 42 दिन बाद है बाद में कुछ भी अतिदेय है। कोविशील्ड के लिए दूसरी खुराक की नियत तारीख या तो 85 से 98 दिन या पहली खुराक से 99 से 112 दिन है। अगर कोई पहली खुराक के 113 दिन बाद भी दूसरी कोविशील्ड खुराक नहीं लेता है तो उसे अतिदेय माना जाता है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी विस्तृत जिलेवार आंकड़ों के अनुसार समय पर दूसरी खुराक नहीं लेने वाले ज्यादातर लोग कोलकाता और उत्तर 24 परगना से हैं। जबकि कोलकाता में ऐसे चार लाख लोग हैं, वहीं उत्तर 24 परगना में यह संख्या 3.8 लाख है। 2.3 लाख लोगों ने दूसरी खुराक नहीं लेने के साथ हुगली तीसरे स्थान पर है। अलीपुरद्वार, मुर्शिदाबाद और दक्षिण 24 परगना जिन जिलों में दो लाख से अधिक लोगों ने अपनी दूसरी खुराक नहीं ली है. इस अंतर को पाटने के लिए पिछले कुछ हफ्तों से बंगाल में दूसरी खुराक के टीकाकरण ने पहली खुराक को पीछे छोड़ दिया है। को-विन के अनुसार डैशबोर्ड पर 9 नवंबर को 3.3 लाख पहली खुराक की तुलना में 3.5 लाख लोगों को दूसरी खुराक दी गई। यह सिलसिला 14 और 15 नवंबर को छोड़कर जारी रहा। मंगलवार से दूसरी खुराक का टीकाकरण पहली खुराक से ज्यादा हो गया है। शनिवार को 2.4 लाख पहली खुराक के मुकाबले 2.8 लाख दूसरी खुराक दी गई। कोलकाता में, दूसरी खुराक के टीकाकरण ने तेज गति पकड़ी है। 8 नवंबर से, कोलकाता टीकाकरण केंद्रों में आने वाले प्रत्येक पहली खुराक प्राप्त करने वालों के लिए, औसतन छह से सात गुना अधिक लोग अपनी दूसरी खुराक के लिए आ रहे हैं। बंगाल में, जिन 8.7 करोड़ लोगों ने अपना टीका प्राप्त किया है, उनमें से 6.1 करोड़ ने पहली खुराक प्राप्त की है और 2.5 करोड़ उनकी दोनों खुराक प्राप्त कर चुके हैं। बंगाल में वैक्सीन योग्य आबादी सात करोड़ से अधिक है।

कर्नाटक की स्वास्थ्य हेल्पलाइन ने आठ वर्षों में 2,062 आत्महत्याओं को टाला

बेंगलुरू: राज्य सरकार की स्वास्थ्य हेल्पलाइन आरोग्य सहायवानी 104 ने 2013 में अपनी स्थापना के बाद से मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से संबंधित 42.6 लाख कॉलों को संभाला, 2,062 आत्महत्याओं को रोका और अवसाद के लगभग 7,000 मामलों में परामर्श प्रदान किया। टोल-फ्री हेल्पलाइन द्वारा प्राप्त 2.3 करोड़ कॉलों में से 1.8% मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों के लिए जिम्मेदार है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने कहा, '100 वैध कॉलों में से, कम से कम दो आत्महत्या सहित मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से संबंधित होंगी।'

अवसाद और आत्महत्या के विचारों के लिए मदद मांगने वाले कॉलों की संख्या धीरे-धीरे कम हो गई है। प्रति सप्ताह, हेल्पलाइन पर आत्महत्या के विचार से संबंधित लगभग तीन वास्तविक कॉल आते हैं। 2013 में 13 आत्महत्याओं को टाला गया, जो 2019 में बढ़कर 491 हो गई लेकिन 2020 में घटकर 173 हो गई। 2021 में ऐसे 120 मामले सामने आए हैं। बेंगलुरू के अन्य आत्महत्या-निवारण हेल्पलाइनों में अनुभव समान नहीं है। मेडिको- पास्टोरल एसोसिएशन (एमपीए) द्वारा संचालित सहाय आत्महत्या रोकथाम हेल्पलाइन पर हर दिन 10-15 वास्तविक कॉल आती हैं और महामारी के चरम पर कुछ ही दिनों में यह संख्या 20 को पार कर जाती है। सा-मुद्रा युवा हेल्पलाइन पर एक दिन में लगभग 25 कॉल आती हैं। सलाहकारों का कहना है कि हालांकि सभी लोग चरम कदम उठाने वालों में से नहीं हैं, लेकिन उदास कॉल करने वालों ने आत्महत्या के विचार रखने की बात स्वीकार की है। हेल्पलाइनों में सबसे ज्यादा परेशानी है उपद्रव कॉल और कर्मचारियों की उच्च दर। आरोग्य सहायवानी के आंकड़ों के मुताबिक, कॉल करने वालों में ज्यादातर की उम्र 15-24 साल है। अधिकारियों ने कहा कि हेल्पलाइन ने इस आयु वर्ग के 1,156 लोगों को चरम कदम उठाने से रोका है। हालांकि मनोचिकित्सकों का कहना है कि आत्महत्या के लिए कोई विशेष कारण जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, हेल्पलाइन ने शीर्ष चार कारणों को प्यार की विफलता, पारिवारिक समस्याओं, करियर मार्गदर्शन और भावनात्मक मुद्दों के रूप में वर्गीकृत किया है। 2008 में शुरू हुई सा-मुद्रा युवा हेल्पलाइन की संस्थापक और प्रबंध न्यासी भारती सिंह कहती हैं कि उनका उद्देश्य युवाओं को करियर, भावनात्मक और चिंता के मुद्दों पर मार्गदर्शन करने के लिए मुफ्त परामर्श प्रदान करना था। ''कॉल करने वालों को प्यार और आराम दिया जाता है और एक धैर्यपूर्वक सुनवाई की जाती है। हम यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि उनकी सहायता प्रणाली क्या है, और यदि उनके आसपास माता-पिता, मित्र, सहकर्मी या बुजुर्ग हैं और उनकी मुकाबला प्रणाली क्या रही है। हम कॉल करने वालों को जज नहीं करते हैं और जरूरी नहीं कि हम उनसे सहानुभूति रखें," डॉ सिंह कहते हैं। हेल्पलाइन पर दुबई और ऑस्ट्रेलिया से भी फोन आए हैं।

महामारी के दौरान हेल्पलाइन पर कॉल बढ़ गई। SAHAI हेल्पलाइन के को-ऑर्डिनेटर और काउंसलर अनीश थॉमस कहते हैं, "ज्यादातर नौकरी छूटने, तालाबंदी के दौरान घर की सीमा के भीतर संघर्ष करने वाले युवाओं, वायरस के डर से तनाव और खुशी की कमी से संबंधित थे।" जबकि अधिकांश कॉल करने वाले वे होते हैं जो उदास महसूस होने पर मदद मांगते हैं, हेल्पलाइन पर उन लोगों के भी कॉल आते हैं जो खुद को नुकसान पहुंचाने से बस एक कदम दूर थे। प्रत्येक वास्तविक कॉल में 30-45 मिनट का समय लगता है और इसके बाद अनुवर्ती कार्रवाई भी होती है।

ब्रिटेन ने चिकित्सा उपकरणों में नस्लीय पूर्वाग्रह पर कार्रवाई का आह्वान किया

ब्रिटेन ने ऑक्सीमीटर जैसे चिकित्सा उपकरणों के मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई का आह्वान किया , जो हल्की त्वचा वाले लोगों पर बेहतर काम करते हैं, यह कहते हुए कि असमानताओं के कारण COVID-19 महामारी के दौरान जातीय अल्पसंख्यक रोगियों की जान जा सकती है । स्वास्थ्य सचिव साजिद जाविद ने कहा कि उन्होंने यह जानने के बाद इस मुद्दे की समीक्षा की है कि ऑक्सीमीटर, जो रक्त ऑक्सीजन के स्तर को मापते हैं और COVID रोगियों का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, गहरे रंग की त्वचा वाले रोगियों के लिए कम सटीक रीडिंग देते हैं।

जाविद ने बीबीसी के साथ एक साक्षात्कार के दौरान कहा, 'यह दुनिया भर में व्यवस्थित है। यह कुछ चिकित्सा उपकरणों में नस्लीय पूर्वाग्रह के बारे में है। यह अनजाने में है लेकिन यह मौजूद है और ऑक्सीमीटर इसका एक अच्छा उदाहरण है।' यह पूछे जाने पर कि क्या इस खामी के कारण लोगों की सीओवीआईडी -19 से मृत्यु हो सकती है, जाविद ने कहा: 'मुझे लगता है कि संभवत: हां। मेरे पास पूरे तथ्य नहीं हैं।' उन्होंने कहा कि विसंगतियों का कारण यह था कि श्वेत बहुसंख्यक देशों में बहुत सारे चिकित्सा उपकरणों, दवाओं, प्रक्रियाओं और पाठ्यपुस्तकों को एक साथ रखा गया था।

जाविद ने कहा, 'मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं कि हम इसके बारे में कुछ करें लेकिन न केवल यूके में। यह एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा है इसलिए मैं इसे बदलने के लिए दुनिया भर में अपने समकक्षों के साथ काम करने जा रहा हूं।'

उन्होंने कहा कि वह पहले ही इस मुद्दे के बारे में अपने अमेरिकी समकक्ष से बात कर चुके हैं, जिनकी इसमें उतनी ही दिलचस्पी थी जितनी कि उनकी। जाविद ने कहा कि ब्रिटेन में अश्वेत और अन्य अल्पसंख्यक जातीय पृष्ठभूमि के लोग COVID-19 से असमान रूप से प्रभावित हुए थे, इस पर गौर करने के बाद उन्हें इस समस्या के बारे में पता चला। उन्होंने कहा कि महामारी के शुरुआती चरणों में, गहन देखभाल इकाइयों में COVID के प्रवेश का एक तिहाई जातीय अल्पसंख्यक रोगियों के लिए था, जो सामान्य आबादी में उनके प्रतिनिधित्व से दोगुना था।

नीट-पीजी काउंसलिंग में देरी से राजस्थान के मेडिकल कॉलेजों के रेजिडेंट डॉक्टरों पर बोझ

जयपुरः निवासियों डॉक्टरों पर सरकार मेडिकल कॉलेजों राज्य भर में डेंगू और में चल रही तेजी के बीच उनकी कुल ताकत का प्रतिशत 66 पर संचालित करने के लिए कर रहे हैं Covid-19 में देरी की वजह से मामलों NEET-पीजी परामर्श। राज्य के मेडिकल कॉलेजों के रेजिडेंट डॉक्टरों को अपनी बाहों पर काले रिबन पहने काम करते देखा गया, जो दर्शाता है कि उन्हें 33.3% रेजिडेंट डॉक्टरों (प्रथम वर्ष) की क्षतिपूर्ति के लिए अतिरिक्त काम करना पड़ा, जो अभी तक अपने कर्तव्यों में शामिल नहीं हुए हैं। राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (एनईईटी-पीजी), जो मार्च में आयोजित होने वाली थी, इस साल महामारी के कारण देरी हुई थी और सितंबर में परीक्षा आयोजित होने के बाद भी, अब प्रक्रिया पर रोक है। परामर्श के रूप में कुछ उम्मीदवारों ने स्नातकोत्तर सीटों पर प्रवेश के लिए अपनाई गई आरक्षण नीति को चुनौती दी है।

छह महीने पहले, लगभग एक तिहाई रेजिडेंट डॉक्टरों को मेडिकल कॉलेजों द्वारा रिहा कर दिया गया था क्योंकि उनका निवास समाप्त हो गया था। निवासी डॉक्टरों को अपने पोस्ट ग्रेजुएशन के पहले, दूसरे और तीसरे वर्ष के दौरान अपने मेडिकल कॉलेजों से जुड़े अस्पतालों में काम करना पड़ता है। यहां तक कि तीसरा बैच छह महीने पहले पास हो गया, और नए बैच (प्रथम वर्ष) में शामिल होना बाकी है। ऐसे में जयपुर एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स के अध्यक्ष डॉ अमित यादव ने कहा, एक मामला, तीन के स्थान पर केवल दो बैच काम कर रहे हैं। डॉ यादव ने कहा, ''डेंगू के मामलों और अन्य मौसमी बीमारियों की संख्या बढ़ गई है और कोविड -19 की तीसरी लहर का डर अभी भी बना हुआ है। ऐसे में वर्तमान में केवल 66% रेजिडेंट डॉक्टर कार्यरत हैं, जो चिंता का विषय है।'' एसएमएस मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट डॉक्टर ही नहीं, बल्कि अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा और झालावाड़ के अन्य सरकारी मेडिकल कॉलेजों से भी शनिवार को काले रिबन पहनकर काम किया था। बीकानेर मेडिकल कॉलेज के रेजिडेंट डॉक्टर और सर्विस डॉक्टर्स विंग के सचिव डॉ सुनील हर्ष ने कहा, ''राज्य भर में, पीजी के सभी तीन बैचों में लगभग 3,000 रेजिडेंट डॉक्टर होने चाहिए, लेकिन वर्तमान में उनमें से लगभग 66% काम कर रहे हैं।''

समरूप

गली का कुत्ता जन्म से पूरे मोहल्ले के लोगों की गालियां और लात-जूते खाता. इसके बदले में उसे कुछ खाने को मिलता, उसने पलटकर न ही किसी को काटा और न ही गुर्राया. एक दिन किसी ने कहा समझदार कुत्ता है बिलकुल इंसानों जैसा है, उसी दिन वह पहली बार गुर्राया और काटने को हुआ. कुछ लगा मानो कह रहा हो, जो भी गाली देना हो सो दे देना, बस इंसान की संज्ञा मत देना.

– डॉ॰ नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर (म०प्र०)
मो॰ 9753698240.

कैसे महामारी ने भारत के स्वास्थ्य सेवा उद्योग पर प्रकाश डाला

पिछले एक दशक में, भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय में लगातार वृद्धि देखी गई है। भारत सरकार ने 2025 तक सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा के अपने लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए हाल के वर्षों में विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं। इसका उद्देश्य महंगी स्वास्थ्य देखभाल लागत का विकल्प प्रदान करके आम आदमी की परेशानियों को कम करना है। Covid-19 महामारी भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को गंभीर रूप से पंगु बनाकर और इसे ठोस वित्तीय सहायता की तत्काल आवश्यकता में छोड़ कर स्थिति और खराब कर दी। इसे संबोधित करने के लिए, केंद्र सरकार ने 2021 के बजट में स्वास्थ्य व्यय में 137% की वृद्धि की घोषणा की। भारत ने अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1.8% स्वास्थ्य सेवा पर खर्च किया, जो कि वैश्विक औसत 6% से अभी भी बहुत दूर है, इसने स्वास्थ्य क्षेत्र को कुछ आवश्यक राहत प्रदान की। कोविड-19 के दौरान स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियाँ भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को एक कड़ी परीक्षा का सामना करना पड़ा क्योंकि वे कोविड-19 महामारी की दो लहरों के दौरान बिस्तर और ऑक्सीजन की कमी से जूझ रहे थे। महामारी की तीव्रता ऐसी थी कि इसने भारत में अस्पताल के बिस्तरों की मौजूदा कमी को और बढ़ा दिया। 2020 की मानव विकास रिपोर्ट से पता चला है कि भारत प्रति 10,000 जनसंख्या पर केवल 5 बिस्तरों के साथ बिस्तर की उपलब्धता के मामले में 155वें स्थान पर है। प्रति 10,000 बिस्तरों की संख्या सामान्य रूप से स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के बेंचमार्क के रूप में उपयोग की जाती है और इसलिए, यह जनसंख्या में वृद्धि के साथ स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के विस्तार में भारत की विफलता को उजागर करती है। इस बीच, दूसरी लहर ने ऑक्सीजन की कमी को भी उजागर किया। जबकि भारत प्रतिदिन 7,000 टन से अधिक ऑक्सीजन का उत्पादन करता है, समस्या परिवहन और भंडारण में है। कई अस्पतालों को ऑक्सीजन की कमी के कारण कई मरीजों को भर्ती करने से मना करना पड़ा।

इस सब के बीच, महामारी के दौरान भारत के स्वास्थ्य कर्मियों का मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ। अत्यधिक लंबे समय तक काम करने के दौरान स्वास्थ्य कर्मियों को उनकी सीमा तक बढ़ा दिया गया। अधिकांश स्वास्थ्य कर्मियों ने प्रतिदिन रोगियों की मृत्यु देखी और दुख की बात है कि उनके पास अपनी भावनाओं से निपटने के लिए समय या स्थान नहीं था।

वैश्विक स्तर पर महामारी से प्रभावित अर्थव्यवस्थाएं और स्वास्थ्य सेवा; भारत में विशेष रूप से, इसकी जनसंख्या के आकार, विविधता और क्षेत्रीय जटिलताओं के कारण परिणाम गंभीर रूप से जोड़े गए थे। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र पर बोझ को कम करने की आवश्यकता तीव्र हो गई है। यह इस समय के दौरान था कि कई क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म आगे बढ़े और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र, इसके रोगियों और उनके परिवारों को मदद प्रदान करने में महत्वपूर्ण थे।

कोविड-19 के दौरान क्राउडफंडिंग ने कैसे लोकप्रियता हासिल की

मेडिकल क्राउडफंडिंग की अवधारणा में पूरे देश के लोग शामिल हैं जो मरीजों को उनके मेडिकल बिलों का भुगतान करने में मदद करने के लिए योगदान करते हैं। ऐसे प्लेटफार्मों पर दान करने वाले दाताओं ने गैर सरकारी संगठनों के लिए भी धन जुटाया, जो वायरस से निपटने के लिए एन 95 मास्क, हजमत सूट, फेस शील्ड जैसे स्वास्थ्य कर्मियों के लिए ऑक्सीजन सांद्रता, आईसीयू बेड और व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) प्रदान करते थे।

महामारी से प्रेरित लॉकडाउन ने कार्यालयों और दुकानों को बंद कर दिया जिससे अनजाने में कई लोगों की आजीविका प्रभावित हुई। जब ऐसे लोगों को चिकित्सा आपात स्थिति का सामना करना पड़ा, तो उनके पास इलाज के साथ आने वाले खर्च को वहन करने का कोई साधन नहीं था। कोविड स्वास्थ्य सेवा केंद्रित ऋण देने वाले प्लेटफार्मों और ऑफलाइन साहूकारों के लिए भी विनाशकारी थे, जिन्हें उच्च चूक के कारण नाटकीय रूप से अपने संचालन को बंद करना पड़ा था। नतीजतन, भारतीय हेल्थकेयर क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म को भारतीयों की मानसिकता में एक बुनियादी बदलाव से काफी फायदा हुआ है - जहां अब बड़ी मेडिकल इमरजेंसी लागतों के वित्तपोषण के लिए उधार देना पसंदीदा तरीका नहीं है। ऐसे मुश्किल समय में, कई क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म ने ऑनलाइन फंड जुटाकर बड़े पैमाने पर समाज की मदद करने के लिए कदम रखा।

क्राउडफंडिंग का केंद्र बिंदु यह है कि व्यक्ति पर कर्ज का कोई बोझ नहीं है क्योंकि जुटाई गई धनराशि को दान के रूप में गिना जाता है। महामारी के मद्देनजर, कुछ क्राउडफंडिंग साइटों ने अपने प्लेटफॉर्म शुल्क को भी माफ कर दिया, ताकि फंडरेजर को चिकित्सा आपात स्थिति का सामना करने वाले रोगियों के लिए अधिकतम धन जुटाने में मदद मिल सके।

कोविड -19 महामारी ने इस तरह के प्रकोप से निपटने के लिए भारत की स्वास्थ्य प्रणाली की दक्षता का परीक्षण किया। जहाँ सीखने के लिए बहुत सारी गलतियाँ थीं, वहीं घर वापस लेने के लिए कुछ सकारात्मक भी थे। महामारी ने भारत में अभिनव स्वास्थ्य सेवा स्टार्टअप्स में वृद्धि देखी, जो डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके रोगी देखभाल सेवाओं में सुधार, पहुंच और सामर्थ्य बढ़ाने पर केंद्रित था।

भारत के स्वास्थ्य सेवा का भविष्य

सभी बातों पर विचार किया जाए तो स्वास्थ्य सेवा अभी भी भारत में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। महामारी ने स्वास्थ्य सेवाओं सहित सब कुछ ऑनलाइन कर दिया है। ऐसे समय में स्वास्थ्य सेवा की बढ़ती आवश्यकता ने भी एक से अधिक तरीकों से क्राउडफंडिंग पर ध्यान आकर्षित किया है।

भारत में मोबाइल इंटरनेट का उपयोग एडटेक और फिनटेक के समान डिजिटल स्वास्थ्य सेवा के लिए प्रमुख प्रेरक शक्ति होगी। भारत में मोबाइल इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 2025 तक 900 मिलियन को छूने के लिए तैयार है, भारतीय स्वास्थ्य सेवा का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल दिखता है!

– इम्पैक्टगुरु की सह-संस्थापक और सीओओ खुशबू जैन.

COVID-19 के लक्षण क्या हैं?

COVID-19 के लक्षणों की बात की जाए, तो इसमें बुखार, थकान, सूखी खांसी शामिल है. साथ ही मरीजों को दर्द होता है और सांस लेने में दिक्कत होती है. इसके अलावा नाक बहती रहती है, गला खराब रहता है और डायरिया होने की भी उम्मीद रहती है. शुरू में ये लक्षण कम रहते हैं, लेकिन धीरे-धीरे वक्त के साथ-साथ बढ़ते जाते हैं. हालांकि कुछ लोगों में संक्रमित हो जाने के बाद लक्षण नहीं पाए जाते हैं और वह अस्वस्थ महसूस भी नहीं करते हैं. कोरोना वायरस से अधिकतर 80 फीसदी मरीज ठीक हो जाते हैं, जिनमें किसी खास तरह की देखभाल की आवश्यकता भी नहीं रहती है. हर छह में से एक व्यक्ति, जिसे कोरोना वायरस होता है, वह गंभीर रूप से बीमार होता है और उसे सांस लेने में खासी दिक्कत पेश आती है. बुजुर्ग व्यक्तियों, जिन्हें हाई ब्लडप्रेशर, हृदय संबंधी रोग, डायबिटीज जैसी स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियां हों, इससे गंभीर रूप से बीमार हो जाते हैं. जिन लोगों को बुखार है, गले में बलगम रहता है और सांस लेने में दिक्कत आती है, उन्हें अपना इलाज करवाने की आवश्यकता रहती है.

+ Veterinary Division +

GRAMPUS

MANUFACTURER of ECTOPARASITICIDES

Email-id: sales.grampus@gmail.com
Web Site: www.grampuslaboratories.com

1.	AMITRAZ	-5% & 12.5%
2.	AMITRAZ	-2% POUR ON
3.	FLUMETHRIN	-1% POUR-ON
4.	CYPERMETHRIN	-1%, 10%,12%, 15%
5.	CYPERMETHRIN	-10% + ETHION 8%
6.	CYPERMETHRIN	-1%, 10% POWDER
7.	DELTAMETHRIN	-1.25% , 1.75%, 2.5%
8.	PERMETHRIN	-2%, 5%, 10%, 11%
9.	FIPRONIL	-0.25%, 1%, 9.7%

ALL PACKS AVAILABLE IN ALUMINIUM, TIN & PET BOTTLES
6ml, 15ml WALL HANGING TRAY PACKS AVAILABLE
FOR PCD & THIRD PARTY : 099960-19744. 78762-20222.
GRAMPUS LABORATORIES
Mfg. Unit: Johron, Near Industrial Area, Kala Amb.(H.P)

देश में कोई वैज्ञानिक प्रमाण कोविड-19 बूस्टर खुराक की आवश्यकता को रेखांकित नहीं करता: आईसीएमआर के डॉ समीरन पांडा

कई विशेषज्ञों ने भारत में कोविड-19 वैक्सीन की बूस्टर खुराक की सिफारिश की है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो कॉमरेडिडिटी या स्वास्थ्य कर्मियों के साथ हैं क्योंकि उन्हें पहले ही दोनों खुराक मिल चुकी हैं।

लेकिन सरकारी सूत्रों के मुताबिक, केंद्र अभी 'हर घर दस्तक' कार्यक्रम के तहत पूर्ण टीकाकरण के अधिकतम कवरेज पर ध्यान केंद्रित कर रहा है ।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) में महामारी विज्ञान और संक्रामक रोग विभाग के प्रमुख डॉ समीरन पांडा ने कहा कि अभी देश के भीतर से वैज्ञानिक साक्ष्य बूस्टर खुराक की आवश्यकता को रेखांकित नहीं करते हैं। एएनआई से बात करते हुए, डॉ पांडा ने कहा, ''स्वास्थ्य मंत्रालय वैज्ञानिक साक्ष्य द्वारा निर्देशित होता है और एनटीएजीआई द्वारा भी सलाह दी जाती है। ये सलाहकार निकाय हैं और मंत्रालय और संबंधित विभागों द्वारा नीति विकसित करने के लिए विचार किया जाता है। इसलिए, नीति निर्माण और निर्णय आधारित होते हैं। वैज्ञानिक साक्ष्य पर। अभी देश के भीतर से वैज्ञानिक साक्ष्य बूस्टर खुराक की आवश्यकता को रेखांकित नहीं करते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य के विचार अब प्राथमिकता पर हैं।''

उन्होंने कहा, ''अगर आप मुझसे पूछें, तो समय की मांग है कि टीके की 2 खुराक वाले व्यक्तियों में 80 प्रतिशत या उससे अधिक कवरेज प्राप्त किया जाए। 80 प्रतिशत से अधिक योग्य व्यक्तियों तक पहुं. चना अब सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकता है।''

उन्होंने बूस्टर डोज के बजाय टीकाकरण कार्यक्रम पर ध्यान देने पर जोर दिया।

''बूस्टर खुराक पर चर्चा करने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि ऐसे लोग हैं जिन्हें आप जानते हैं, दूसरे दिन आगे आने में झिझकते हुए यह सोचकर कि इसलिए, अगर हम बूस्टर पर लौटने के लिए चर्चा करते हैं तो हम वास्तव में कार्यक्रम को आधा छोड़ रहे हैं,'' वह जोड़ा गया।

एशियन सोसाइटी फॉर इमरजेंसी मेडिसिन (एएसईएम) के अध्यक्ष डॉ तामोरिश कोले ने कहा, ''जब हम तीसरी खुराक के बारे में बात कर रहे हैं, तो हमें प्रतिरक्षा के निम्न स्तर, कैंसर के रोगियों और अंग प्राप्त करने वाले रोगियों जैसे प्रतिरक्षा-समझौता के साथ प्राथमिकता देनी चाहिए। प्रत्यारोपण और उन्हें पहले बूस्टर खुराक दें। इसलिए, मैं सरकार से तीसरी खुराक देने के लिए अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को प्राथमिकता देने का आग्रह करूंगा।''

बिना सर्जरी के हृदय दोष वाले समय से पहले जन्मे नवजात का इलाज

कुछ महीने पहले, हमें एक परिधीय अस्पताल से 40 दिन के बच्चे के लिए एक रेफरल कॉल आया था, जिसका शरीर बहुत कम वजन के साथ गंभीर स्थिति में था। बच्चे को पेटेंट डक्टस आर्टेरियोसस या पीडीए का निदान किया गया था, जो समय से पहले बच्चों में पाई जाने वाली एक सामान्य स्थिति है। डॉक्टरों ने पीडीए को बंद करने के लिए वायर मेश डिवाइस का उपयोग करके एक न्यूनतम इनवेसिव उपचार प्रक्रिया की और शिशु का सफलतापूर्वक इलाज किया। भारत में, प्रत्येक 1000 नवजात शिशुओं में से आठ हृदय दोष से पीड़ित हैं, जो प्रति वर्ष जन्मजात हृदय रोग के साथ पैदा होने वाले लगभग 1.5 लाख शिशुओं का कारण है । शिशु मृत्यु दर का लगभग 10% केवल जन्मजात हृदय रोग के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। ये दोष सरल से जटिल तक होते हैं। डॉक्टर द्वारा कुछ समस्याओं की जांच की जा सकती है और दवाओं के साथ प्रबंधित किया जा सकता है, अन्य को सर्जरी की आवश्यकता होती है, कभी-कभी बच्चे के जन्म के पहले कुछ घंटों में ही।

नवजात शिशुओं में हृदय दोषों को समझना

यह जानना महत्वपूर्ण है कि जन्मजात हृदय रोग को समझने के लिए हृदय कैसे कार्य करता है। हृदय को कक्षों में विभाजित किया गया है - दो ऊपरी कक्ष (अटरिया) और दो निचले कक्ष (निलय)। दिल का दाहिना हिस्सा रक्त वाहिकाओं के माध्यम से फेफड़ों में रक्त पहुंचाता है जिसे फुफ्फुसीय धमनियों के रूप में जाना जाता है। फेफड़ों में ऑक्सीजन युक्त रक्त फिर हृदय के बाईं ओर लौट आता है। हृदय का बायां भाग फिर एक रक्त वाहिका के माध्यम से शरीर के बाकी हिस्सों में रक्त पंप करता है जिसे महाधमनी कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित होता है, तो उनके हृदय की कोई भी संरचना प्रभावित हो सकती है, जिसमें वाल्व, कक्ष, धमनियां और ऊतक की दीवार शामिल है जो ऊपरी और निचले कक्षों को अलग करती है जिसे सेप्टम कहा जाता है।

जन्मजात हृदय दोष को मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। एक फेफड़े में बढ़े हुए प्रवाह के साथ जिसमें पेटेंट डक्टस आर्टेरियोसस (पीडीए), एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट (एएसडी), वेंट्रिकुलर सेप्टल डिफेक्ट (वीएसडी), और एट्रियोवेंट्रिकुलर कैनाल (एवीसी या एवी कैनाल) महाधमनी (सीओए), फुफ्फुसीय स्टेनोसिस का समन्वय शामिल है। और महाधमनी प्रकार का रोग (एएस)।

एक अल्ट्रासाउंड (भ्रूण इकोकार्डियोग्राफी या विसंगति स्कैन) का उपयोग करके गर्भावस्था के दौरान जन्मजात हृदय दोषों का पता लगाया जा सकता है। जन्म के बाद, असामान्य दालों या असामान्य हृदय ध्वनियों के रूप में एक शारीरिक परीक्षा में संदेह पर इकोकार्डियोग्राफी का उपयोग करके दोषों का निदान किया जाता है। अन्य सुराग जो जन्मजात हृदय रोग की उपस्थिति की ओर इशारा करते हैं, वे हैं निम्न ऑक्सीजन स्तर, बार-बार होने वाला निमोनिया, खराब वजन बढ़ना, लगातार भोजन करना और सांस लेने में कठिनाई, या हृदय रोग से प्रभावित पिछली बीमारी के इतिहास के साथ।

पीडीए आमतौर पर अपरिपक्व शिशुओं में होता है, खासकर श्वसन संकट सिंड्रोम वाले लोगों में। परिपक्व पूर्ण अवधि के नवजात शिशुओं में पीडीए की घटना 2000 जन्मों में 1 है, जो सीएचडी के 5-10% के लिए जिम्मेदार है, जबकि समय से पहले नवजात शिशुओं में, घटना 20-60% तक होती है। पीडीए तब होता है जब एक रक्त वाहिका जिसे डक्टस आर्टेरियोसस कहा जाता है, जो फुफ्फुसीय धमनी को सीधे महाधमनी से जोड़ती है (जिसे जन्म के बाद बंद होना चाहिए), खुला रहता है। यह महाधमनी से फेफड़ों में अतिरिक्त रक्त प्रवाह की ओर जाता है और अक्सर समय से पहले शिशुओं में देखा जाता है। आम तौर पर पीडीए जन्म के 72 घंटों के भीतर बंद हो जाता है। लेकिन अगर पीडीए बनी रहती है, तो इसका परिणाम अक्सर दिल की विफलता, गुर्दे की विफलता, मस्तिष्क रक्तस्राव, खराब वजन, या फेफड़ों की भीड़ में हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु, लंबे समय तक अस्पताल में रहने, या वेंटिलेटर या सीपीएपी पर निर्भरता हो सकती है। ऐसे में पीडीए को बंद करना जरूरी है।

इस स्थिति का इलाज कैसे किया जा सकता है?

इस स्थिति के लिए तीन प्रकार के उपचार विकल्प उपलब्ध हैं, अर्थात् चिकित्सा प्रबंधन, शल्य चिकित्सा प्रबंधन और गैर शल्य चिकित्सा प्रक्रिया। पेरासिटामोल, इबुप्रोफेन और इंडोमेथेसिन तीन दवाएं हैं जिनका व्यापक रूप से पीडीए को बंद करने में उपयोग किया जाता है। इसलिए, नवजात शिशुओं में इस स्थिति का इलाज करने के लिए आमतौर पर चिकित्सा उपचार पहली पसंद होता है। यदि यह विफल हो जाता है और बच्चे की स्थिति बिगड़ जाती है, तो दो विकल्प हैं - सर्जिकल और गैर-सर्जिकल। सर्जिकल मरम्मत सामान्य संज्ञाहरण के तहत की जाती है और इसमें अतिरिक्त रक्त को बच्चे के फेफड़ों में प्रवेश करने से रोकने के लिए क्लिप या टांके का उपयोग करके छाती के किनारे के माध्यम से सर्जिकल चीरा द्वारा खुले पीडीए को बंद करना शामिल है। वायर मेश ऑग्लुडर डिवाइस क्लोजर का उपयोग करके ट्रांसकैथेटर मार्ग द्वारा इस स्थिति का इलाज करने का तीसरा और उन्नत विकल्प। विशेष हृदय चिकित्सक जिन्हें पीडियाट्रिक कार्डियक इंटरवेंशनिस्ट कहा जाता है, पीडीए को बंद करने के लिए एक न्यूनतम इनवेसिव प्रक्रिया का उपयोग करते हैं। चिकित्सा प्रौद्योगिकी ने मटर के आकार के एक उन्नत उपकरण का स्थान ले लिया है जो 500 ग्राम तक के छोटे से छोटे बच्चों का भी इलाज करने में मदद कर सकता है। यह चिकित्सकीय रूप से उन्नत वायर मेश डिवाइस स्व-विस्तारित है और इसे पैर की नस में एक पंचर के माध्यम से डाला जाता है और जहाजों के माध्यम से हृदय तक निर्देशित किया जाता है, जहां इसे हृदय में उद्घाटन को सील करने के लिए रखा जाता है। यह चिकित्सक को महाधमनी या फुफ्फुसीय धमनी के माध्यम से इसे सम्मिलित करने की अनुमति देने के साथ-साथ इष्टतम प्लेसमेंट, रिलीज के लिए डिवाइस को पुनः प्राप्त और पुनः नियोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

इस प्रक्रिया की न्यूनतम इनवेसिव प्रकृति के कारण, नवजात गहन देखभाल इकाई में गंभीर रूप से बीमार कई समय से पहले के बच्चों को सर्जरी की तुलना में कम जोखिम के साथ प्रक्रिया के तुरंत बाद कृत्रिम श्वसन सहायता से मुक्त किया जा सकता है। वर्षों से, जन्मजात हृदय दोषों को ओपन-हार्ट सर्जरी से ठीक किया गया था जिसमें रक्त आधान, रक्त संक्रमण और लंबे समय तक अस्पताल में रहने जैसे जोखिम शामिल थे। इसका श्रेय उन्नत तकनीकों को जाता है, अब हमारे पास कम जटिलताओं और कम अस्पताल में रहने वाले शिशुओं के इलाज के लिए चयनित हृदय स्थितियों के लिए न्यूनतम इनवेसिव प्रक्रियाएं हैं।

रोकथाम के मामले

यद्यपि तकनीकी प्रगति ने सीएचडी के साथ एक लाख लोगों की जान बचाने में एक निश्चित बढ़त दी है, माता-पिता या गर्भवती माता-पिता को कुछ बातों को ध्यान में रखना चाहिए। युवा महिलाओं को गर्भवती होने से पहले ही प्रसव पूर्व देखभाल लेनी चाहिए। धूम्रपान छोड़ना, तनाव कम करना, फोलिक एसिड की खुराक लेना, अपने रक्त शर्करा को बनाए रखना स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण होगा। किसी भी दवा के बारे में चर्चा करने की सलाह दी जाती है जिसका आप डॉक्टर से सेवन कर रहे हैं। एक स्वस्थ आहार खाने, नियमित व्यायाम करने और एक अनुकूलित योजना विकसित करने के लिए डॉक्टर के साथ मिलकर काम करने से स्वस्थ शरीर को बनाए रखने में मदद मिलेगी।

-डॉ. सुदीप वर्मा, बाल रोग विशेषज्ञ, केआईएमएस अस्पताल, सिकंदराबाद, हैदराबाद.

नवम्बर माह के त्यौहार

23.11.2021	अंगार की चतुर्थी
24.11.2021	वीड पंचमी
27.11.2021	कालाष्टमी, महाकाल भैरवष्टमी
28.11.2021	विद्यापती स्मृती दिवस
30.11.2021	वैतरणी व्रत

मध्यम वर्गीय व्यवसायी व उसके परिवार पर बड़ा संकट

नरेन्द्र गुप्ता जी

मोबाइल ऑन लाइन दवा व्यवसाय रोकने में यदि शीघ्र ठोस उपाय न किया गया तो वो दिन दूर नहीं जब वर्तमान दवा व्यवसाय, पीसीओ व लैंडलाइन की तरह गायब हो इतिहास के पन्नों में समाहित हो जाएगा.

-नरेंद्र गुप्ता, पूर्व सचिव दवा संगठन,
मो. 7747990810.

Elders' share in Mumbai Covid toll up, nears pre-vaccination days

MUMBAI: Six months after being immunised with both doses, Kandivali resident Sharadchandra Shenoy (63) succumbed to Covid-19 pneumonia in October. The 63-year-old, who had a history of hypertension and diabetes, battled the viral infection for 13 days in hospital. The family is still searching for answers, said his brother Dr Satishchandra Shenoy, a family physician.

While Covid-19 deaths in Mumbai continue to see a steady drop over the months, the proportion of senior citizens in fatalities, which had considerably fallen after the start of immunisation, is rising once again and nearing levels in pre-vaccination days. Experts say the trend calls for studies on depleting antibody levels, an urgent debate on third dose for the vulnerable population and an analysis of comorbidities, reports Sumitra Deb Roy.

'Elders will account for big share of toll due to comorbidities'

BMC data shows that senior citizens accounted for 76% of Covid deaths in January, 84% in February and 80% in March. As vaccination opened for the elderly in March, their share of deaths dropped to 65% in April, while that of people between 40-60 years touched 30%, up from 14% in March (see graphic). In September and October, however, their proportion rose to 79% and 80%, respectively, almost like the pre-vaccination months. Dr Avinash Supe, who heads Mumbai's Covid-19 death audit committee, underlined that vaccination has brought down the death count. "But, a small pool of deaths is likely to be there, and senior citizens will account for the lion's share because of comorbidities."

A majority of Covid deaths in Mumbai at present are among the unvaccinated, susceptible people, like senior citizens with comorbidities and those who didn't have adequate antibody production after vaccination. BMC data shows that 75% to 82% of Covid victims have one or the other comorbidity, like hypertension, diabetes, heart or kidney condition. From the peak of 1,475 and 1,723 deaths registered in April and May, Mumbai's toll dropped to 134 in September and 137 in October, said Dr Supe, adding it was mainly due to vaccination. An answer to whether depletion of antibody levels is making senior citizens susceptible cannot be found till such studies have been done, said Dr Rahul Pandit, an intensivist and member of state Covid task force. But, he is of the opinion that a discussion on booster shot for senior citizens should start now. BMC has sought the opinion of the task force on the matter, said Suresh Kakani, additional municipal commissioner. "Vaccination of senior citizens began in March...concerns are their antibody levels may have gone down. But since giving a booster shot is a larger decision, we will wait to hear from the task force."

जीवन काल कैसे बढ़ाएं? शोधकर्ताओं ने एक रास्ता खोजा

जबकि हर कोई लंबा और स्वस्थ जीवन जीना चाहता है, यह सभी के लिए संभव नहीं है। हालांकि, हाल के शोध ने ट्यूमर शमन प्रोटीन पीटीईएन के महत्व पर प्रकाश डाला है जो आपके स्वास्थ्य काल को बढ़ा सकता है, जब लंबे जीवन काल को बढ़ावा देने के लिए उपचार बनाने का लक्ष्य रखा जाता है। यह अध्ययन जैविक विज्ञान विभाग के प्रोफेसर सेउंग-जे वी ली के तहत आयोजित किया गया था। **यह 'नेचर कम्युनिकेशंस जर्नल' में प्रकाशित हुआ था।**

इंसुलिन और इंसुलिन की तरह वृद्धि कारक -1 (IGF-1) सिग्नलिंग (IIS) छोटे राउंडवॉर्म से लेकर मनुष्यों तक के जीवन रूपों में मौजूद क्रमिक रूप से संरक्षित उम्र बढ़ने-मॉड्यूलेटरी मार्गों में से एक है। IIS की उचित कमी से जानवरों में दीर्घायु होती है लेकिन अक्सर बिगड़ा हुआ गतिशीलता, प्रजनन और विकास सहित कई स्वास्थ्य मापदंडों में दोष होता है।

शोध दल ने पाया कि पीटीईएन प्रोटीन में एक विशिष्ट अमीनो एसिड परिवर्तन कम आईआईएस द्वारा प्रदत्त दीर्घायु को बनाए रखते हुए स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करता है। उन्होंने राउंडवॉर्म सी। एलिगेंस का इस्तेमाल किया, जो एक उत्कृष्ट मॉडल जानवर है जिसका व्यापक रूप से उम्र बढ़ने के अनुसंधान के लिए उपयोग किया गया है, इसका मुख्य कारण लगभग दो से तीन सप्ताह का सामान्य जीवनकाल बहुत कम है।

पीटीईएन प्रोटीन एक फॉस्फेट है जो लिपिड के साथ-साथ प्रोटीन से फॉस्फेट को हटा देता है। दिलचस्प बात यह है कि नए पहचाने गए अमीनो एसिड ने लिपिड फॉस्फेट गतिविधि को कम करते हुए प्रोटीन फॉस्फेट गतिविधि को आंशिक रूप से बनाए रखते हुए आईआईएस को नाजुक रूप से पुनर्गणना किया।

नतीजतन, पीटीईएन प्रोटीन में अमीनो एसिड परिवर्तन ने दीर्घायु को बढ़ावा देने वाले प्रतिलेखन कारक फोर्कहेड बॉक्स ओ (फॉक्सो) प्रोटीन की गतिविधि को बनाए रखा, जबकि एक अन्य प्रतिलेखन कारक, एनआरएफ 2 के हानिकारक अपचयन को प्रतिबंधित करते हुए, जानवरों में लंबे और स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर किया। आईआईएस कम। प्रोफेसर सेउंग-जे वी ली ने कहा, ''हमारा अध्ययन एक प्रोटीन, पीटीईएन की गतिविधि को थोड़ा सा बदलाव करके मनुष्यों में दीर्घायु और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की रोमांचक संभावना को बढ़ाता है।''

5वीं कोविड लहर 'बिजली' की गति से टकरा रही है: फ्रांस

पैरिस: फ्रांस में पांचवीं लहर के कोरोनावायरस संक्रमण एक खतरनाक दर से बढ़ रहे हैं, सरकार ने बताया नए दैनिक कोविड मामले पिछले एक सप्ताह में दोगुने होने के करीब हैं। स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, नए मामलों का सात दिन का औसत 17,153 तक पहुंच गया, जो एक सप्ताह पहले 9,458 था, स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, 81 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सरकार के प्रवक्ता गेब्रियल अटल ने मीडिया को बताया, ''पांचवीं लहर बिजली की गति से शुरू हो रही है।''

नवीनतम सात दिनों की वृद्धि पिछले तीन हफ्तों में दर्ज मामलों की औसत वृद्धि का तीन गुना है, जो संक्रमण के एक घातीय त्वरण का संकेत देती है।

अभी के लिए संक्रमण में स्पाइक ने अस्पतालों में कोविड के रोगियों की भारी आमद नहीं की है, अधिकारियों ने सीमित संख्या में गहन देखभाल रोगियों को फ्रांस के टीकाकरण की उच्च दर के लिए जिम्मेदार ठहराया है जो कोविड के सबसे खतरनाक रूपों के खिलाफ अत्यधिक प्रभावी दिखाई देते हैं। अस्पतालों ने उनकी देखभाल में कुल 7,974 कोविड रोगियों की सूचना दी, जिनमें से 1,333 गहन उपचार में थे। यह एक महीने पहले क्रमशः 6,500 और 1,000 की तुलना करता है। ''संक्रमण में बहुत मजबूत वृद्धि हुई है, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि फ्रांस में हमारे पास बहुत बड़ा टीकाकरण कवर है,'' उन्होंने कहा। ''हमें लगता है कि बूस्टर शॉट्स के मामले में हम अपने पड़ोसियों से आगे हैं।'' उन्होंने कहा कि गर्मियों में अन्य देशों से आगे फ्रांस द्वारा स्वास्थ्य पास की शुरूआत भी कोविड को नियंत्रण में रखने में मदद कर रही थी, उन्होंने कहा।

फ्रांसीसी रेस्तरां, कैफे और कई सांस्कृतिक स्थलों में आवश्यक स्वास्थ्य पास, प्रमाणित करता है कि एक व्यक्ति पूरी तरह से टीका लगाया गया है, हाल ही में कोविड से बरामद हुआ है, या वायरस के लिए नकारात्मक परीक्षण किया है। अटल ने कहा कि सरकार 'टीकाकृत लोगों के बजाय गैर-टीकाकरण वाले लोगों पर प्रतिबंधों का भार लाने' के लिए अपनी पसंद पर कायम है।

"समयानुसार बुरे दिन तो निकल जाते हैं पर वे अनेक अनुभवों गुणों और सहनशक्ति का उपहार दे जाते हैं"

जो व्यक्ति न किसी को भय दिखाता है न स्वयं किसी के भय के आगे झुकता है, वही सच्चा ज्ञानी है

WHO के अभियान के लिए हैदराबाद की इमारतें 'नीली' होंगी

हैदराबाद: रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के 'गो ब्लू' अभियान के तहत 24 नवंबर को हैदराबाद की कई इमारतों को नीला रंग दिया जाएगा । इनमें मोज्जम जाही मार्केट, दुर्गम चेरुवु केबल ब्रिज और हैदराबाद विश्व. विद्यालय (मुख्य प्रवेश द्वार) शामिल हैं।

आयोजकों द्वारा जारी एक विज्ञप्ति में कहा गया है, ''रोगाणुरोधी प्रतिरोध और इसे संबोधित करने की रणनीतियों को अब तेलंगाना सरकार द्वारा प्राथमिकता के रूप में पहचाना गया है।'' इसमें कहा गया है: हालांकि हर साल लाखों लोग एंटीमाइक्रोबायल प्रतिरोधी संक्रमण से प्रभावित होते हैं, लेकिन कुछ ने इसे सुना है। यह अभियान विश्व रोगाणुरोधी जागरूकता सप्ताह का हिस्सा है, जो हर साल 18 से 24 नवंबर तक मनाया जाता है। 2021 की थीम स्प्रेड अवेयरनेस, स्टॉप रेसिस्टेंस है।

WHO के साथ हाथ मिलाना यूनिसेफ, भारतीय संक्रमण नियंत्रण अकादमी (आईएफसीएआई), रिएक्ट एशिया पैसिफिक, यूओएच और सुपरबग्स के खिलाफ सुपरहीरो हैं। आयोजकों ने तेलंगाना के राज्यपाल को पत्र लिखकर राजभवन को नीला करने का अनुरोध किया है, जवाब का अभी इंतजार है।

अगर आप सोचते हैं कि ज्ञान पाना महंगा है, तो अज्ञानी बनकर देखो

Happy Birthday

Name	City	D.O.B.	Mob
Paresh N. Chauhan	Gondia	02.11.83	9823219202
Ashish A. Jain	Gondia	06.11.80	9422131261
Abhijit Pachpate	Dhule	12.11.81	8007761099
Topesh Rahangale	Seoni	16.11.77	9425888813
Cheten Bhadane	Dhule	23.11.85	9420378136
Dhanjay	Bhandara	25.11.84	8275398391

मैडीकल दर्पण मीडिया हाऊस की तरफ से आप सभी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाऐं

4 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक, बुलन्दशहर के जो कि फार्मा दर्पण **खाता संख्या 1824002100118703,** IFSC Code - PUNB0182400 Branch- Deputy Ganj के नाम से है, में रू० 500/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 09045029158 पर भेज दें.

शहनाई बजी

नगर के जाने-माने होम्योपैथिक डॉक्टर चेतन प्रकाश गुप्ता जी की बिटिया अंशिका का परिणयोत्सव चिरंजीव प्रियांशु के साथ 28 नवंबर को प्रेम गार्डन, नियर पंडित पेट्रोल पम्प, भूड़ चौराहा, दिल्ली रोड, बुलन्दशहर (उ०प्र०) में संपन्न होने जा रहा है. मैडीकल दर्पण मीडिया हाऊस की ओर से बिटिया को ढेर सारा आशीर्वाद, नव दंपत्ति के स्वागत के लिए स्पर्श गुप्ता (आईएएस), आशीष (इंजीनियर), मानवी, आकांक्षा, कृतिका, आयुषी, अमन, मेहुल, अनिका, इरा, माधव, पिक्सी आदि स्वागत के लिए उत्सुक हैं.

– डॉ० चेतन प्रकाश गुप्ता,
मो० 9358010712, 9897036042.

समय मुफ्त में मिलता है, परंतु यह अनमोल है।
आप इसे अपना नहीं सकते,
लेकिन आप इसका उपयोग कर सकते हैं।
आप इसे रख नहीं सकते,
पर आप इसे खर्च कर सकते हैं।
एक बार आपने इसे खो दिया,
तो वापस कभी इसे पा नहीं पाएंगे!

अंधविश्वास पर एक चोट

जिंदगी के हर फैसले
नहीं होते इन लकीरों से
जिन्हें खुद पर यकीन नहीं
अक्सर वो पूछते हैं फकीरों से.
हौसलों की उड़ान से
नामुकिन को मुमकिन कर
हिम्मत न हार बन्दे
खुद पर यकीन कर.
पंख में कैसे फलक दबाते
सीख जरा परिंदों से
जिंदगी के हर फैसले
नहीं होते इन लकीरों से.
जो अपनी राहें खुद तलाशे
नहीं किसी से रस्ता पूछे
दुनिया झुकी उनके आगे
जिन्होंने किये खुद पर भरोसे.
लम्बी डगर पर कैसे चलना
पूछ जरा उन बनजारों से
जिंदगी के हर फैसले
नहीं होते इन लकीरों से.

– आशु सिंह 'अमित'
मो० 9929141414, 9887008585.

दवाओं के दाम बेलगाम

सौरभ तिवारी

गाजियाबाद के सौरभ तिवारी, मो० 8449337957 से मिली जानकारी के अनुसार चीन से कच्चे माल की आपूर्ति प्रभवित होने के बाद अब डीजल के दाम बढ़ने से दवाओं के दाम बेलगाम हो गये है. दवाइयों और आपरेशन में प्रयोग होने वाले सर्जिकल सामानों के दाम 15 से 40 फीसदी तक की बढ़ोतरी हो गयी है, वहीं बी.पी., शुगर से लेकर अन्य जीवन रक्षक दवाओं के दाम में बढ़ोतरी होने से लोगों का मासिक इलाज खर्च बढ़ गया हैं. सर्वाधिक बिकने वाली बुखार की दवा पैरासिटामॉल का दाम डेढ़ गुना बढ़ गया है, एक माह पहले तक 38 रूपये में मिलने वाले 10 गोली की कीमत 45 रूपये हो गयी है. इसी तरह एंटीबायोटिक व हृदय रोग की दवाओं और मल्टी विटामिन दवाओं के दाम में भी वृद्धि हुई है. चीन से आने वाला कच्चा माल सिर्फ 30 फीसदी हो आ पा रहा है और डीजल के दामों में वृद्धि का असर अब दोहरा मार रहा है, आगे यदि यही स्थिति रहती है तो दामों में और भी बढ़ोतरी देखी जा सकती हैं.

मध्यमवर्गीय व्यवसायी व उसके परिवार पर बड़ा संकट

वर्तमान शासकीय नीतियों वा आधुनिक टेक्नोलॉजी के चलते आज देश का पूरा व्यवसाय चन्द मुट्ठी भर अरबपति उद्योगपति व ऑनलाइन व्यवपारियों के हाथों में जा रहा है। इससे जनसंख्या बाहुल्य भारत देश के गरीब व मध्यम वर्ग का व्यापार खत्म होने की राह पर है। 10 लाख दवा व्यपारियों व इन पर आश्रित 40 लाख स्टाफ व उनके परिवार के जीवन पर गंभीर संकट आ पड़ा है। बढ़ती महंगाई व बेरोजगारी से हालात और गंभीर हो चले हैं। शासन व मीडिया, चांद तथा सूरज तक पहुंचने की बातें करने में व्यस्त हैं। यहाँ धरती पर बसे मध्यमवर्गीय परिवार विलुप्त होने की कगार पर हैं। शासन जन समस्यायों को सुनने व सुलझाने व समय देने को तैयार नहीं है। –नरेंद्र गुप्ता, पूर्व सचिव दवा संगठन, मो. 7747990810.

पारदर्शी और जवाबदेह सरकार

86 लाख किसानों के रू० 36 हजार करोड़ के ऋण माफ

गन्ना किसानों को रू० 1.44 लाख करोड़ से अधिक गन्ना मूल्य का भुगतान 476 लाख मी. टन चीनी का रिकॉर्ड उत्पादन खाण्डसारी इकाइयों को नि:शुल्क लाइसेंस

एम.एस.पी. में दोगुना तक वृद्धि

- 435 लाख मी. टन खाद्यान्न की सरकारी खरीद किसानों को रू० 79,000 करोड़ का भुगतान
- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में 2 करोड़ 53 लाख 98 हजार किसानों को रू० 37,521 करोड़ हस्तांतरित
- 2399 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसानों को रू० 2376 करोड़ की क्षतिपूर्ति
- किसानों को रू० 4 लाख 72 हजार करोड़ फसली ऋण भुगतान
- 45 कृषि उत्पाद मंडी शुल्क से मुक्त मंडी शुल्क 1 प्रतिशत घटाया गया 27 मंडियों का आधुनिकीकरण 125 ई-नाम मंडी की स्थापना.

– सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश.

समरूप

गली का कुत्ता जन्म से पूरे मोहल्ले के लोगों की गालियां और लात-जूते खाता. इसके बदले में उसे कुछ खाने को मिलता, उसने पलटकर न ही किसी को काटा और न ही गुर्राया. एक दिन किसी ने कहा समझदार कुत्ता है बिलकुल इंसानों जैसा है, उसी दिन वह पहली बार गुर्राया और काटने को हुआ. कुछ लगा मानो कह रहा हो, जो भी गाली देना हो सो दे देना, बस इंसान की संज्ञा मत देना.

–डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा,
ग्वालियर (म०प्र०),
मो० 9753698240.

खून निर्दोष का मत बहाना कभी

खून निर्दोष का मत बहाना कभी,
और मजलूम को मत सताना कभी।
जिस जगह जाने पर कोई पूछे नहीं,
तुम वहां भूल कर भी न जाना कभी।
हाथ से अपने मेहनत हमेशा करो,
पाप का धन न तुम कमाना कभी।
पेट में बात जिसके पचे ही नहीं,
राज दिल का उसे मत बाताना कभी।
जिसने भी तेरी गर की हो मदद,
उसको दिल से न तुम भुलाना कभी।
ठीक जिसकी नियत जो न तुमको लगे,
पास उसको न अपने बिठाना कभी।
गर जमाने की रोशन करोगे डगर,
फिर बनेगा तुम्हारा फसाना कभी।
नाम सेवक दिलों में जो तुम्हारा रहे,
काम वो करके दुनिया से जाना कभी।

– हरभजन सिंह दियोल,
मो. 9350944368.

निकुँज स्वामी की ओर से ब्रजेश कुमार गर्ग द्वारा प्रकाशित तथा मुद्रितः इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एण्ड पैकिंग लिमिटिड नोएडा, गौतम बुद्ध नगर में मुद्रित एवं बी0एन0 मैडीकल कॉम्प्लैक्स, बुलन्दशहर से प्रकाशित सम्पादक- ब्रजेश कुमार गर्ग